हिन्दी

व्याकरण एवं रचना

Teachers' Manual

कक्षा 7

हिन्दी व्याकरण एवं रचना कक्षा - 7

अध्याय–1 संज्ञा

1. (i) ग (ii) ग (iii) घ (iv) क (v) घ (vi) ग (vii) ग (viii) क (ix) घ (x) ख (xi) ग (xii) ख (xiii) घ (xiv) घ (xv) ख।

2. **संज्ञा**—किसी भी व्यक्ति, जाति, भाव या स्थान के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं। जैसे—राम, बस, दिल्ली, गाय, टेबल आदि।

3. संज्ञा के तीन भेद होते हैं—

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा, 2. जातिवाचक संज्ञा, 3. भाववाचक संज्ञा।

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**— जिन शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का ज्ञान होता है; उन संज्ञा शब्दों को व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द कहते हैं। जैसे—कुतुबमीनार, महात्मा गाँधी, अशोक आदि।

2. **जातिवाचक संज्ञा**—जिन शब्दों से व्यक्ति, प्राणी, स्थान तथा वस्तु के नाम की अपेक्षा उनकी सम्पूर्ण जाति का बोध हो, तो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे— बालक पढ़ रहे हैं, सब्जियाँ सजी हुई हैं, मिठाई ताजी है।

3. **भाववाचक संज्ञा**—जिन शब्दों से अवस्था, भावों तथा गुणों के नाम की पहचान की जाती है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—उदारता से समाज चलता है, वीरता वीरों का गुण है, क्रोध एक मानवीय दुर्गुण है।

4. **जातिवाचक संज्ञा**—जिन शब्दों से व्यक्ति, प्राणी, स्थान तथा वस्तु के नाम की अपेक्षा उनकी सम्पूर्ण जाति का बोध हो, तो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे— बालक पढ़ रहे हैं, सब्जियाँ सजी हुई हैं, मिठाई ताजी है।

5. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**— जिन शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का ज्ञान होता है; उन संज्ञा शब्दों को व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द कहते हैं। जैसे—कुतुबमीनार, महात्मा गाँधी, अशोक आदि।

6. **भाववाचक संज्ञा**—जिन शब्दों से अवस्था, भावों तथा गुणों के नाम की पहचान की जाती है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—उदारता से समाज चलता है, वीरता वीरों का गुण है, क्रोध एक मानवीय दुर्गुण है।

7. **द्रव्यवाचक संज्ञा**—वे शब्द जिनसे द्रव्य या पदार्थ के नाम की सूचना मिलती है, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा शब्द कहते हैं। जैसे—जल ही जीवन है, इसे बचाइए। पैट्रोल के दाम आसमान पर हैं।

8. **समूहवाचक संज्ञा**— जो शब्द व्यक्तियों तथा वस्तुओं के समूहों की सूचना देते हैं, ऐसे शब्द समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं। जैसे—पुस्तक मेले में बहुत भीड़ है। मधुमक्खी का झुंड अचानक टूट पड़ा।

(i) राधा (व्यक्तिवाचक संज्ञा) → उल्टा करने पर → धारा (द्रव्यवाचक संज्ञा)

(ii) दया (भाववाचक संज्ञा) → उल्टा करने पर → याद (भाववाचक संज्ञा)

(iii) भला (विशेषण/संज्ञा) → उल्टा करने पर → लाभ (भाववाचक संज्ञा)

(iv) राही (जातिवाचक संज्ञा) → उल्टा करने पर → हीरा (द्रव्यवाचक संज्ञा)

9. हिमालय—व्यक्तिवाचक, महिला—जातिवाचक, समुद्र—जातिवाचक, सतलुज—व्यक्तिवाचक, दया—भाववाचक, भावना—भाववाचक।

10.

(क)		(ख)
सेवक	–	जातिवाचक संज्ञा
बड़प्पन	–	भाववाचक संज्ञा
श्रेष्ठ	–	विशेषण
रँभाना	–	क्रिया
निज	–	सर्वनाम
मिस्टर राय	–	व्यक्तिवाचक संज्ञा
विधानसभा	–	समूहवाचह संज्ञा
धीरे-धीरे	–	अव्यय
नौलखा हार	–	द्रव्यवाचक संज्ञा

12. (क) योग्यता (ख) लड़ाई (ग) बुढ़ापे (घ) चतुराई (ङ) बुराई (च) बड़प्पन (छ) मिलन (ज) देनदारी (झ) भलाई (ञ) जवानी।

- ***खेल-खेल में***

व्यक्तिवाचक संज्ञा – मोहन पढ़ता है।
जातिवाचक संज्ञा – डॉक्टर भगवान का दूसरा रूप होते हैं।
भाववाचक संज्ञा – खान-पान से स्वास्थ्य अच्छा रहता है।
समूहवाचक संज्ञा – मुझे फूलों का गुच्छा बहुत पसन्द है।
द्रव्यवाचक संज्ञा – जल है, तो कल है। इसे बचाइए।

अध्याय–2 सर्वनाम

1. (i) ख (ii) ग (iii) क (iv) ख (v) ग (vi) घ (vii) ग (viii) ग (ix) क (x) ग (xi) ख (xii) ख (xiii) घ (xiv) ख (xv) घ।

2. **सर्वनाम**–संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द, सर्वनाम शब्द कहलाते हैं। जैसे–उसकी, मुझे, वह, तुम, कोई आदि।

3. सर्वनाम के छह प्रमुख भेद हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम
6. निजवाचक सर्वनाम

4. सर्वनाम के भेदों के उदाहरण–

1.	पुरुषवाचक सर्वनाम	– मुझे	2.	निश्चयवाचक सर्वनाम	– यह
3.	अनिश्चयवाचक सर्वनाम	– कुछ	4.	संबंधवाचक सर्वनाम	– जिसकी
5.	प्रश्नवाचक सर्वनाम	– किसे	6.	निजवाचक सर्वनाम	– स्वयं

5. पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद–(क) उत्तम पुरुष (ख) मध्यम पुरुष (ग) अन्य पुरुष

(क) **उत्तम पुरुष –** जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता स्वयं के लिए करता है, वह **उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम** कहलाते हैं। इनके अंतर्गत मैं, मेरा, मेरे, मेरी, मुझे, मुझको, हम, हमें, हमको, हमारा, हमारे और हमारी शब्द आते हैं। जैसे– **मैं** फुटबॉल खेलता हूँ। **हम** दो **हमारे** दो।

(ख) **मध्यम पुरुष –** जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता की बातों को सुनने के लिए किया जाता है, वे **मध्यम पुरुष** कहलाते हैं। इनके अंतर्गत तू, तुझे, तुझको, तेरा, तेरे, तेरी, तुम, तुम्हें, तुमको, तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे, आप, आपको और आपके, आपकी, अपना शब्द आते हैं। जैसे– **तुम** बहुत अच्छे हो। **तुम्हें** सभी पसंद करते हैं। पर **तुम्हारी** बहन ऐसी नहीं है।

(ग) **अन्य पुरुष –** जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी तीसरे व्यक्ति के बारे में बात करने के लिए किया जाता है, वे **अन्य पुरुष** कहलाते हैं। इनके अंतर्गत यह, उसे, इसका, इसकी, इसके, वह, उसे, उसको, उसका, उसकी, उसके वे उन्हें उनका उनकी उनके आदि शब्द आते हैं। जैसे– **वह** श्रेष्ठ विद्यार्थी है। उसके पिता मजदूर हैं। **वे** सदा सत्य बोलते हैं।

6. निजवाचक सर्वनाम तथा उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम में निम्न अन्तर है–

निजवाचक सर्वनाम–वे सर्वनाम शब्द जिनसे कर्त्ता या संज्ञा शब्द के साथ उसके अपनेपन का बोध हो, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–मैं अपना काम स्वयं करूँगा।
यहाँ स्वयं सर्वनाम शब्द मैं के साथ अपनेपन की जानकारी देता है।

उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम–वे सर्वनाम शब्द जो वक्ता या बोलने वाले के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे–मुझे नींद आ रही है।

7. (क) जिनको, (ख) मुझसे, (ग) किसकी, (घ) आप में (ङ) तुम्हारे, (च) इनसे।

8. (क) मैं (कर्मकारक)—मुझे/मुझको
वाक्य— शिक्षक ने मुझे बुलाया।
(ख) वह (अपादान कारक)— उससे
वाक्य— राम उससे बड़ा है।
(ग) तुम (संबंध कारक)— तुम्हारा/तुम्हारी/तुम्हारे
वाक्य—यह तुम्हारा घर है।
(घ) मैं (सम्प्रदान कारक)— मेरे लिए/मुझे
वाक्य—पापा मेरे लिए कार लाए।
(ङ) हम (अपादान कारक)— हमसे
वाक्य—वह हमसे रूठकर दूर चला गया।
(च) तू (अपादान कारक)— तुझसे
वाक्य—मुझे तुझसे यह उम्मीद नहीं थी।

9.

	शब्द	**सर्वनाम भेद**	**कारक भेद**
(क)	उससे	पुरुषवाचक	कर्ता कारक
(ख)	तुम्हें	पुरुषवाचक	कर्ता कारक
(ग)	किससे	प्रश्नवाचक	करण/अपादान कारक
(घ)	वे	निश्चयवाचक	कर्ता कारक
(ङ)	मेरा	पुरुषवाचक	संबंध कारक
(च)	किसी	अनिश्चयवाचक	कर्म कारक

10.

(क)		**(ख)**
तुमको	—	पुरुषवाचक
अपने आप	—	निजवाचक
किसका	—	प्रश्नवाचक
कुछ	—	अनिश्चयवाचक
मेरा	—	संबंधवाचक
यह	—	निश्चयवाचक

● *खेल-खेल में*

- उनका — अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
- उनके — अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
- यह — निश्चयवाचक सर्वनाम
- इस — निश्चयवाचक सर्वनाम
- वे — अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
- उन्होंने — अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
- मैंने — उत्तम पुरुष सर्वनाम
- मेरा — उत्तम पुरुष सर्वनाम

अध्याय–3 विशेषण

1. (i) घ (ii) ख (iii) घ (iv) क (v) ग (vi) घ (vii) क (viii) ख (ix) ख (x) ग (xi) क (xii) ख (xiii) ग (xiv) ग (xv) क।
2. **विशेषण**—वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।
3. विशेषण की तीन अवस्थाएँ हैं—(i) मूलावस्था (ii) उत्तरावस्था (iii) उत्तमावस्था।
4. **परिमाणवाचक विशेषण**—वे शब्द जिनसे वस्तुओं का परिमाण या मात्रा अथवा वजन की सूचना दी जा सकती है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

5. **संख्यावाचक विशेषण**–वे शब्द जिनसे वस्तुओं अथवा व्यक्तियों की संख्या की जानकारी दी जाती है; उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

6. **प्रविशेषण** – वे शब्द जो विशेषण शब्दों की विशेषता बताते हैं, प्रविशेषण कहलाते हैं।

7. सा, सी, से का प्रयोग समानता का बोध कराने के लिए किया जाता है। उदाहरण– आसमान नीला–सा हो गया है। वहाँ छोटी–सी लड़की खेल रही है। ये लंबे–से पेड़ देवदार के हैं।

8. **विशेषण**– वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।
प्रविशेषण – वे शब्द जो विशेषण शब्दों की विशेषता बताते हैं, प्रविशेषण कहलाते हैं।

9. **सर्वनाम**–वे शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।
सार्वनामिक विशेषण–जो सर्वनाम शब्द संज्ञा/सर्वनाम के पूर्व आकर उसकी विशेषता बताते हैं, वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

10. **उत्तरावस्था**–विशेषण की इस अवस्था में दो व्यक्तियों, स्थानों अथवा वस्तुओं के गुण–दोष के बीच तुलना की जाती है।
उत्तमावस्था–इसमें तुलना के दौरान एक को सबसे अधिक या कम बताया जाता है।

11. (क) कमाऊ – खिलाड़ियों, (ख) दुर्बल – व्यक्ति, (ग) निचला – हिस्सा, (घ) क्रोधी – व्यक्ति, (ङ) अनुभवी – व्यक्ति, (च) पालनहार – भगवान।

12. थोड़ा – (i) थोड़े केले और दे दो। (संख्यावाचक)
(ii) मुझे थोड़ा दूध चाहिए। (परिमाणवाचक)
बहुत – (i) मैदान में खिलाड़ियों की संख्या बहुत कम थी। (संख्यावाचक)
(ii) घर में बहुत अनाज भरा है। (परिमाणवाचक)
कुछ – (i) कुछ सेव अच्छे और मीठे हैं। (संख्यावाचक)
(ii) बर्तन में कुछ घी और डाल दो। (परिमाणवाचक)
जरा – (i) प्रवचन हॉल में जरा से आदमी थे। (संख्यावाचक)
(ii) शरबत में जरा सी चीनी और डाल दो। (परिमाणवाचक)

13. (क) स्नेहमय, (ख) कुलीन, (ग), ऊपरी, (घ) यौगिक, (ङ) चालू, (च) रंगीन, (छ) कौन–सी, (ज) बाहरी, (झ) आनंदित, (ञ) नीतिज्ञ, (ट) पूजनीय, (ठ), व्यावहारिक।

14.

(क)	गुरु	गुरुतर	गुरुतम
(ख)	तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
(ग)	कोमल	कोमलतर	कोमलतम
(घ)	न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
(ङ)	दीर्घ	दीर्घतर	दीर्घतम
(च)	मंद	मंदतर	मंदतम

15. (क) वह गाय उसकी है। यह गाय है। (ख) ये नींबू खट्टे हैं। ये नींबू हैं।
(ग) वे फल अच्छे हैं। ये फल हैं। (घ) वह गाड़ी उनकी है। वह गाड़ी है।

16. वार्षिक, (ख) मरियल, (ग) स्वर्णिम, (घ) सहायक, (ङ) सपेरा, (च) जोशीला।

17.

(क)		**(ख)**
नटखट	–	बालक
ऐतिहासिक	–	किला
अधखिला	–	फूल
विशाल	–	हृदय
दयालु	–	राजा
मीठा	–	रायता
सादा	–	भोजन

● *खेल-खेल में*

छात्र स्वयं करें।

अध्याय–4 लिंग

1. (i) ख (ii) ग (iii) क (iv) ग (v) ग (vi) क (vii) क (viii) ग (ix) क (x) ग (xi) घ (xii) ख (xiii) ख (xiv) ख (xv) घ।
2. **लिंग**—जिन शब्दों से उनके स्त्री या पुरुष जाति के होने की जानकारी मिले, उन्हें लिंग कहते हैं।
3. लिंग के दो भेद होते हैं—
   (i) **पुल्लिंग**—जिन शब्द रूपों से पुरुष जाति के होने की सूचना मिले, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं।
   जैसे— छात्र, अध्यापक, घी।
   (ii) **स्त्रीलिंग**—जिन शब्द रूपों से स्त्री जाति के होने की सूचना मिले, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं।
   जैसे—छात्रा, शालू, शिक्षिका, जेठानी आदि।
4. उल्लू, चीता
5. मछली, चील
6. मादा चीता, मादा मगर
7. नर मछली, नर तितली
8. (क) पुल्लिंग (ख) पुल्लिंग (ग) पुल्लिंग (घ) स्त्रीलिंग (ङ) पुल्लिंग
9. (क) हलवाइन, (ख) बाघिन, (ग) नायक, (घ) घोड़ा, (ङ) बेगम, (च) वर।
10. (क) पुल्लिग — उबले हुए चावल खाने चाहिए।
    (ख) स्त्रीलिंग — हरियाणा के व्यक्ति खड़ी बोली बोलते हैं।
    (ग) स्त्रीलिंग — भक्त मण्डली बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रही है।
    (घ) पुल्लिग — मन की शांति के लिए हवन हो रहा है।
    (ङ) स्त्रीलिंग — यह कुर्सी मेरी है।
    (च) पुल्लिग — पलाश के फूल साहित्यकारों के प्रिय वर्ण्य विषय हैं।
11. (क) मालिन, (ख) चिड़िया, (ग) तपस्विनी, (घ) पंडिताइन, (ङ) श्रीमती, (च) सेविका, (छ) रूपवती, (ज) कवयित्री, (झ) वीरांगना, (ञ) साम्राज्ञी।
12. **स्त्रीलिंग**—हिन्दी, जेल, कलम, डिबिया, पहाड़ी, सिलाई।
    पुल्लिग—सागर, थैला, कमरा, चना, आम, भादों, बुधवार, पैसा, छिपा, राख, चबैना।
13. (क) स्त्रीलिंग, (ख) पुल्लिग, (ग) पुल्लिग, (घ) स्त्रीलिंग, (ङ) पुल्लिग, (च) पुल्लिग।

- ***खेल-खेल में***

स्त्रीलिंग	**पुल्लिग**	**उभयलिंग**
टोपी	लेखक	राष्ट्रपति
नानी	भगवान	डॉक्टर
शेरनी	सेठ	पत्रकार
प्रिया	पिता	प्रोफेसर
धोबिन	घोड़ा	इन्जीनियर

अध्याय–5 वचन

1. (i) क (ii) क (iii) क (iv) ग (v) क (vi) घ (vii) क (viii) ग (ix) घ (x) क (xi) घ (xii) घ (xiii) क (xiv) क (xv) ख।

2. **वचन**—जिन शब्द रूपों से उनकी संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

जैसे—

एकवचन	**बहुवचन**
किताब	किताबें
घोड़ा	घोड़े
बहन	बहनें

3. वचन के दो भेद हैं— (1) एकवचन (2) बहुवचन

(1) एकवचन – पंखा, बहुवचन – पंखे (2) एकवचन – तितली, बहुवचन – तितलियाँ

4.

सदैव एकवचन	**सदैव बहुवचन**
जनता	प्राण
सत्य	आँसू
वर्षा	दाम
पानी	

5. (क) युवा (ख) गौएँ (ग) ऋतुएँ (घ) मेज (ङ) विधि (च) राहें
(छ) बुढ़ियाँ (ज) पक्षी (झ) कुरतों (ञ) बस्ता।

6. (क) रचना (ख) रानियाँ (ग) गाय (घ) जूते (ङ) दीवारें (च) लेखकगण

7. (क) चिड़ियाँ अपने घोंसलों में वापस आ रही हैं। (ख) सड़कें खाली पड़ी हैं।
(ग) बेटियाँ अनमोल उपहार होती हैं। (घ) चाबियाँ घर पर ही रह गईं।
(ङ) बच्चे सड़क पार नहीं कर पा रहे हैं। (च) हाथी अपनी चाल चल रहे हैं। कुत्ते भौंक रहे हैं।

8. (क) रोते समय आँसू निकलते हैं। (बहुवचन)
(ख) रोजाना 6 से 7 गिलास पानी पीना चाहिए। (बहुवचन)
(ग) टीम का एक दल रवाना हो चुका है। (एकवचन)
(घ) कृपया हस्ताक्षर कर दीजिए। (बहुवचन)
(ङ) मित्रवर्ग आज पिकनिक पर जाएँगे। (बहुवचन)
(च) सुधीजन समाज को दिशा देते हैं। (बहुवचन)

9. (क) मेरा कुर्ता पहन रहे हैं। (ख) भेड़ें दौड़ती जा रही हैं।
(ग) गुरुजन हमें बहुत अच्छी सीख देते हैं। (घ) आकाश कितना लाल हो रहा है।
(ङ) चाय बड़ी अच्छी बनाई है। (च) आकाश में पतंगें उड़ रही हैं।

● *खेल-खेल में*

1. चतुर (एकवचन) 2. रातें (बहुवचन)
3. तराजू (एकवचन) 4. जहाज (एकवचन)
5. जगत (एकवचन)

अध्याय–6 कारक

1. (i) घ (ii) क (iii) घ (iv) ग (v) क (vi) घ (vii) ग (viii) क (ix) ख (x) ख (xi) क (xii) ग (xiii) ग (xiv) ख (xv) ग।

2. **कारक**—वे शब्द या शब्दांश जो संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के शेष भाग से जोड़ते हैं, कारक कहलाते हैं।

जैसे— पिताजी दिल्ली को जाएँगे।
राम श्याम का दोस्त है।

को, का शब्द जोड़ने से वाक्य पूर्ण हो जाता है, ये शब्द ही कारक कहलाते हैं।

3. कारक के आठ भेद होते हैं–

(i) कर्ता कारक – बस ड्राइवर ने ब्रेक लगाए।
(ii) कर्म कारक – गन्दगी को साफ करना चाहिए।
(iii) करण कारक – मैं बस से आगरा गया।
(iv) संप्रदान कारक – आज पिताजी के लिए गाड़ी खरीदूँगा।
(v) अपादान कारक – बुरी संगति से दूर रहना चाहिए।
(vi) सम्बन्ध कारक – यह राहुल की किताब है।
(vii) अधिकरण कारक – सीता पार्क में खेल रही है।
(viii) संबोधन कारक – अरे ! तुम यहीं रह गये।

4. (क) **कर्म कारक** – वाक्य में क्रिया का प्रभाव जिस पर होता है, वह 'कर्म' कहलाता है।
संप्रदान कारक – जिस कारक से किसी को कुछ देने का भाव प्रकट हो, उसे संप्रदान कारक कहते हैं।
(ख) **करण कारक** – कारक के जिस रूप से क्रिया के कारण या साधन का बोध हो, उसे करण कारक कहते हैं।
अपादान कारक – जिस कारक चिह्न से किसी व्यक्ति या वस्तु से अलग होने का भाव प्रकट हो रहा हो, उसे अपादान कारक कहते हैं।

5. (क) से (द्वारा)– करण कारक (ख) में – अधिकरण कारक
(ग) से (अलग होना) – अपादान (घ) के लिए – संप्रदान कारक
(ङ) की – संबंध कारक (च) अरे ! – संबोधन कारक

6. से– 1. मैं मोहन से अलग रहता हूँ।
2. दूध पीने से ताकत आती है।
को– 1. राहगीर को जल पिलाना मानवता का काम है।
2. यह किताब मैं पीयूष को दूँगा।

7.

अरे! कहाँ चला आ रहा है?	–	संबोधन कारक
आप यहाँ किससे पहुँचे?	–	करण कारक
मैं तो छत पर सोता हूँ।	–	अधिकरण कारक
राम के भाई ने ही धोखा दिया है।	–	संबंध कारक
वकुल को बुलाया जा रहा है।	–	कर्म कारक
आप कहाँ से आए हैं?	–	अपादान कारक
मनुज ने क्या खाया?	–	कर्ता कारक
रितिका के लिए क्या लाए?	–	संप्रदान कारक

8. (क) ने – कर्ता कारक, पर – अधिकरण कारक
(ख) से – करण कारक
(ग) को – कर्म कारक, ने – कर्ता कारक, से – करण कारक
(घ) ने – कर्ता कारक, को – कर्म कारक, में – अधिकरण कारक
(ङ) से – करण कारक
(च) पर – अधिकरण कारक

● ***खेल-खेल में***

1. मैं गया ।	मुझको जाना चाहिए।
2. तुम जाओ ।	तुमको जाना चाहिए।
3. वह खाए।	उसको खाना चाहिए।
4. साँप मार डाला।	साँप को मार डाला।
5. छात्र पीटा है।	छात्र को पीटा है।

6. तुम यहीं रह गए।	अरे! तुम यहीं रह गए।
7. बालक गेंद खेल रहे हैं।	बालक गेंद से खेल रहे हैं।
8. मेरा भाई गाँव आया है।	मेरा भाई गाँव से आया है।
9. घर एक मंदिर है।	घर में एक मंदिर है।
10. तुम काम कर लेना।	तुम अपना काम कर लेना।

अध्याय–7 क्रिया

1. (i) क (ii) ग (iii) घ (iv) घ (v) ख (vi) ग (vii) क (viii) घ (ix) क (x) ग (xi) ख (xii) ख (xiii) ग (xiv) क (xv) घ।

2. **क्रिया**—वे शब्द जिससे किसी कार्य के किए जाने या होने का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं।

3. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं— (1) सकर्मक क्रिया (2) अकर्मक क्रिया।
जैसे—(1) हर्षिता सब्जी बनाती है। (2) रवि दौड़ता है।

4. पूर्वकालिक क्रिया तथा कृदंत क्रिया में निम्न अंतर हैं—
पूर्वकालिक क्रिया—वे क्रिया रूप जो मुख्य क्रिया से पूर्व आकर मुख्य क्रिया को विस्तार देते हैं, उन्हें पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। जैसे— रवीना आकर सो गई।
कृदंत क्रिया—वे क्रिया जो कृत् प्रत्यय के योग से बनती हैं। वे कृदंत क्रिया कहलाती हैं। जैसे— चल + आ = चला।

5. (क) **अकर्मक क्रिया**—जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म उपस्थित न हो, अकर्मक क्रिया कहते हैं।
सकर्मक क्रिया—वह क्रिया जिसमें कर्म उपस्थित हो, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
(ख) **एककर्मक क्रिया**—जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक ही कर्म उपस्थित हो, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं।
द्विकर्मक क्रिया—जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म एक साथ उपस्थित हों, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।
(ग) **प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया**—जिस क्रिया में कर्ता स्वयं उपस्थित होकर कार्य की प्रेरणा दे, उसे प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।
द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया—जब कर्ता कार्य में स्वयं न सम्मिलित होकर किसी और को कार्य करने की प्रेरणा देता है, उसे द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

6.

	प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया	**वाक्य**
(क)	रुलाना	बच्चों को रुलाना नहीं चाहिए।
(ख)	पढ़ाना	राम को पढ़ाना आवश्यक है।
(ग)	जिताना	श्याम को यह मैच जिताना होगा।
(घ)	सुलाना	माँ बच्चे को सुलाना चाहती है।
(ङ)	लिखवाना	रमेश अपनी माँ से पत्र लिखवाना चाहता है।
(च)	सिलवाना	दर्जी से मयंक शर्ट सिलवाना चाहता है।
(छ)	दौड़ाना	घोड़े को दौड़ाना होगा।

7. (क) बनाती (ख) सिखाया (ग) पढ़ना (घ) कर (ङ) टकरा (च) गिरने (छ) खाकर

8. (क) दनदनाना (ख) ललचाना (ग) खरीदना (घ) हिनहिनाना (ङ) नरमाना (च) शर्माना (छ) मुटियाना (ज) टिमटिमाना (झ) हथियाना (ञ) गाँठना (त) दुहराना (थ) लतियाना

9. (क) भागकर (ख) आकर (ग) खेलते-खेलते (घ) लेटते ही (ङ) गिरते-गिरते (च) आए (छ) रुक-रुककर

10. (क) पढ़ (ख) चढ़ (ग) रुद् (घ) समझ (ङ) खिल (च) चल (छ) छँट (ज) नाच (झ) देख (ञ) रो (च) धो (छ) बो

11. (क) वह जाकर सोया। (ख) तुम उठकर चलो। (ग) मैं अभी जाकर आया। (घ) कहाँ चले गये। (ङ) इधर चलकर आओ। (च) यहाँ उठकर बैठो।

● *खेल-खेल में*

1. मुग्धा खिला रही है।
2. अनुज पिला रहा है।
3. वह खाकर टहलने चला गया।
4. बच्चा पीकर सो गया।
5. अभिनव खा चुका था।

अध्याय-8 काल

1. (i) ख (ii) घ (iii) क (iv) ग (v) ग (vi) घ (vii) घ (viii) ख (ix) क (x) ग (xi) क (xii) घ (xiii) ग (xiv) ग (xv) क।

2. **काल**—क्रिया के जिस रूप से उसके घटित होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं।

3. किसी कार्य के करने या होने का बोध कराने वाले शब्दों को क्रिया कहते हैं। यह क्रिया जिस समय में होती है वह उसका काल कहलाता है।

4. **हेतु हेतुमद भूतकाल**—क्रिया के जिस रूप से भूतकाल में होने वाला कार्य किसी और क्रिया पर निर्भर हो, उसे हेतु हेतुमद भूतकाल कहते हैं। जैसे—सूरज निकल आता तो ठण्ड कम हो जाती।

   हेतु हेतुमद भविष्यकाल—क्रिया के जिस रूप से भविष्य में होने वाला कार्य किसी अन्य कार्य के होने पर निर्भर हो, उसे हेतु हेतुमद भविष्यकाल कहते हैं। जैसे—समय पर बारिश न हुई तो फसल सूख जाएगी।

5. (क) अर्जुन ने बाण बरसाए थे। (ख) तुम तुरंत निकल गए थे। (ग) सुहानी स्कूल नहीं जाती है। (घ) मयंक खाना खा रहा है। (ङ) सोहन पढ़ेगा तो उत्तीर्ण हो जाएगा।

6. (क) अकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया (ग) अकर्मक क्रिया (घ) सकर्मक क्रिया (ङ) सकर्मक क्रिया (च) सकर्मक/अकर्मक क्रिया (छ) सकर्मक क्रिया (ज) सकर्मक क्रिया

7. (क) राम, श्याम घूमते होंगे। (ख) तुम खेलते तो जीत जाते। (ग) शायद आज बुआ जी आएँगी। (घ) रोहन पत्र लिख रहा है। (ङ) गजल समाप्त हो गयी।

8. **(क) होना—** (i) बारिश हो रही है। (ii) कल (ख) परीक्षा परिणाम घोषित हुआ।
   (ख) जाना— (i) राम आगरा जाएगा। (ii) संजय अजमेर जाता है।
   (ग) मिलना— (i) मेले में बालक मिल गया था। (ii) दोनों भाई गले मिलते हैं। (iii) मैं कल भाई से मिलूँगा।
   (घ) देखना— (i) मैंने प्रकृति का मनोरम दृश्य देखा था। (ii) मोहन चित्तौड़ का किला देखेगा। (iii) सीता चित्र देखती है।

● *खेल-खेल में*

संदिग्ध वर्तमान काल	**भविष्यत् काल**
1. राज जाता होगा।	राज जाएगा।
2. बच्चे फुटबॉल खेलते होंगे।	बच्चे फुटबॉल खेलेंगे।
3. रघु पढ़ता होगा।	रघु पढ़ेगा।
4. सीता खाना खाती होगी।	सीता खाना खाएगी।
5. सुहानी स्कूल जाती होगी।	सुहानी स्कूल जाएगी।

अध्याय–9 उपसर्ग

1. (i) क (ii) घ (iii) ग (iv) ख (v) घ (vi) ख (vii) ग (viii) घ (ix) ख (x) क (xi) घ (xii) घ (xiii) ख (xiv) क (xv) ख।

2. **उपसर्ग**—वे शब्दांश जो मूल शब्द के पूर्व आकर जुड़ते हैं और उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

3. **परिभाषा**— वे अव्यय (शब्दांश) जो अन्य शब्दों के आगे जुड़कर उन्हें एक नया अर्थ देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

4. उपसर्ग चार प्रकार के होते हैं—

(i)	संस्कृत के उपसर्ग	—	अनु	—	अनुकूल
			अभि	—	अभिमान
(ii)	हिन्दी के उपसर्ग	—	अ	—	अलग
			अन	—	अनमोल
(iii)	उर्दू के उपसर्ग	—	कम	—	कमजोर
			हर	—	हरदिल
(iv)	संस्कृत के अव्यय	—	अधः	—	अधः पतन
			स्व	—	स्वदेश

5. (क) ला—लावारिस, लापता (ख) बद—बदनाम, बदसूरत
(ग) बे—बेवकूफ, बेईमान (घ) बा—बाअदब, बाकायदा

6.

उपसर्ग मूल शब्द	**उपसर्ग**		**मूल शब्द**
(क) उप	ग्रह	(ख) परि	वहन
(ग) अति	आचार	(घ) सह	पाठी
(ङ) प्र	ताप	(च) कम	जोर
(छ) अव	मानना	(ज) प्रति	क्षण

7.

	उपसर्ग	**शब्द**	**अर्थ**
होनी —	अन	अनहोनी	जो पहले से निश्चित न हो।
पता —	ला	लापता	गायब
शासन —	अनु	अनुशासन	नियंत्रण
जय —	परा	पराजय	हार
देशी —	वि	विदेशी	देश से बाहर का

8. (क) प्र—आगे, दूर—प्रबल, प्रमोद
(ख) ला—बिना—लाजवाब, लाइलाज
(ग) नि—निषेध, अधिकता—निबंध, निवास
(घ) उन—एम कम—उनतीस, अनसठ
(ङ) प्रति—हर एक—प्रतिदिन, प्रतिवर्ष
(च) पर—दूसरा, पराया—परलोक, परदेशी
(छ) ब—से, के अनुसार—बनाम, बदस्तूर
(ज) कु—बुरा—कुपुत्र, कुकर्म
(झ) ना—अभाव—नापसंद, नामुराद
(ञ) बा—के साथ—बाइज्जत, बाअदबे

● *खेल-खेल में*

1. सत्कार	1. कुविचार
2. सहकार	2. कुकर्म
3. सदाचार	3. कुदृष्टि
4. सहधर्मी	4. कुकृत्य
5. सहयोग	5. कुपुत्र

अध्याय–10 प्रत्यय

1. (i) ख (ii) क (iii) क (iv) ग (v) ग (vi) क (vii) ग (viii) ख (ix) ख (x) ख (xi) ग (xii) ख (xiii) ग (xiv) ख (xv) ग।
2. **प्रत्यय**—कुछ शब्दांश शब्दों के अन्त में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं। ऐसे शब्दांशों को प्रत्यय कहा जाता है।
3. प्रत्यय के मुख्यत: दो भेद होते हैं— (i) कृत् प्रत्यय (ii) तद्धित प्रत्यय।
4. जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।
लोहा + आर = लोहार। गाड़ी + वाला = गाड़ीवाला। मुख + इया = मुखिया।
मनुष्य + ता = मनुष्यता। देव + त्व = देवत्व।
5. जब प्रत्यय क्रियाओं या धातुओं के अंत में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं तो कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।
जैसे—पालन + हार = पालनहार । सज + आवट = सजावट, दिख + आवा = दिखावा। पढ़ + आई = पढ़ाई। हँस + ई = हँसी।

6.

शब्द	प्रत्यय	मूल शब्द	शब्द	प्रत्यय	मूल शब्द
चढ़ावा	आवा	चढ़	लुटेरा	ऐरा	लुट
लड़ाका	आका	लड़	भुलक्कड़	अक्कड़	भुल
कृपालु	आलु	कृपा			

7.

ई	अभिमानी	मोहिनी	लु	कृपालु	दयालु
आना	सालाना	मर्दाना	एरा	चचेरा	खचेरा
आवट	सजावट	लिखावट	तम	लघुतम	दीर्घतम
आन	उड़ान	थकान	हार	पालनहार	देखनहार

8.

आई	—	अच्छाई	=	राम की अच्छाई की सभी तारीफ करते हैं।
ऊ	—	पेटू	=	कुश बहुत पेटू है।
ईय	—	दर्शनीय	=	मथुरा एक दर्शनीय स्थल है।
आलु	—	दयालु	=	दयालु होना एक अच्छा गुण है।

9.

	उपसर्ग	प्रत्यय		उपसर्ग	प्रत्यय
कमजोरी	कम	ई	बेरहमी	बे	ई
बदसूरती	बद	ई	निर्दयता	निर्	ता

10. (क) अड़ियल, (ख) रमणीय, (ग) थाली, (घ) बिछौना, (ङ) मनौती (च) बिकाऊ

11. (क) बेईमानी (ख) बेइज्जती (ग) सरकारी (घ) बदसूरती (ङ) लापरवाही

● *खेल-खेल में*

1. कार + खाना = कारखाना **2.** लड़क + पन = लड़कपन

3. फिसलन + ई = फिसलनी **4.** घिरन + ई = घिरनी

अध्याय–11 समास

1. (i) ख (ii) क (iii) ग (iv) क (v) घ (vi) क (vii) क (viii) ख (ix) घ (x) ख (xi) ग (xii) क (xiii) ख (xiv) क (xv) ग।

2. **समास**—जब दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर एक नया, छोटा और सार्थक शब्द बनता है, उसे समास कहते हैं। इसे समस्तपद भी कहते हैं।

समास के निम्नलिखित छः भेद होते हैं—

1. अव्ययीभाव समास 2. तत्पुरुष समास 3. द्विगु समास 4. बहुव्रीहि समास 5. द्वंद्व समास 6. कर्मधारय समास

3. तत्पुरुष समास उपभेद होते हैं—(i) कर्म तत्पुरुष (ii) करण तत्पुरुष (iii) संप्रदान तत्पुरुष (iv) अपादान तत्पुरुष (v) संबंध तत्पुरुष (vi) अधिकरण तत्पुरुष।

4. **अव्ययीभाव समास** — जिस समास का पूर्व पद अव्यय हो तथा वह प्रधन भी हो, तो वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। जैसे—(i) आजीवन—जीवन भर (ii) यथाशक्ति—शक्ति के अनुसार

5. **कर्मधरय समास** — जिस समास में एक पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य अथवा एक पद उपमेय और दूसरा पद उपमान होता है, उसे कर्मधरय समास कहते हैं। जैसे— (i) पीतांबर—पीला है जो वस्त्र (ii) प्रिय है जो मित्र

6. **द्विगु समास** — जिस समास का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो और जिससे समूह का बोध हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे—

(i) त्रिलोक—तीन लोगों का समूह (ii) चौपाया—चार पैरों का समाहार

(iii) दोपहर—दो प्रहरों का समाहार (iv) चौराहा—चार राहों का समूह

7. **द्वन्द्व समास**—वह, समास, जिसमें दोनों पद प्रधान होते हैं। इसमें योजक शब्दों का लोप करके नया शब्द बनाया जाता है, द्वन्द्व समास कहलाता है। जैसे— भाई और बहन=भाई-बहन। सीताराम—सीता और राम।

8. **बहुव्रीहि समास** — जिस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता और दोनों पद भाव (आशय) के आधार पर किसी अन्य पद की ओर संकेत करते हैं, वहाँ बहुव्रीहि समास होता है। बहुव्रीहि समास में आए दोनों पदों को छोड़कर किसी तीसरे पद की प्रधानता होती है। जैसे—

(i) पीतांबर—पीले हैं वस्त्र जिसके वह—कृष्ण (ii) दशानन—दस हैं आनन जिसके वह—रावण

9. (क) छोटी-बड़ी—छोटी और बड़ी (ख) राधा-कृष्ण—राधा और कृष्ण (ग) दुबली-पतली— दुबली और पतली (घ) माता-पिता—माता और पिता (ङ) सुख-दुःख—सुख और दुःख।

10.

समास	**विग्रह**	**समास का नाम**	**वाक्य प्रयोग**
सेंकी-तली	सेंकी और तली	द्वन्द्व समास	सेंकी-तली पूड़ियाँ परोसी जा रही हैं।
शोकमग्न	शोक में मग्न	बहुव्रीहि समास	राम वनगमन से दशरथ शोकमग्न हो गए।
भोजनालय	भोजन के लिए घर	संप्रदान तत्पुरुष	पतितपावन की आराधना करो।
वनगमन	वन को गमन	कर्म तत्पुरुष	राम के वनगमन के कारण दशरथ ने प्राण त्याग दिए।
शापग्रस्त	शाप से ग्रस्त	करण तत्पुरुष	शापग्रस्त अश्वत्थामा पीड़ा से कराह उठा।

चिंताग्रस्त	चिंता से ग्रस्त	करण तत्पुरुष	रामू के पिता चिंताग्रस्त बैठे थे।
आजन्म	जन्म पर्यन्त	अव्ययी भाव	भीष्म ने आजन्म ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा की।
निर्भय	बिना भय के	अव्ययी भाव	शेर वन में निर्भय विचरण करता है।
स्नान गृह	स्नान के लिए गृह	संप्रदान तत्पुरुष	स्नानगृह को साफ-स्वच्छ रखना चाहिए।

11. (क) चन्द्रवदन (ख) स्नानघर (ग) त्रिकोण (घ) राजा-रंक (ङ) बेमतलब (च) राष्ट्रप्रेम

12. हस्तलिखित—करण तत्पुरुष अवकाशप्राप्त—कर्म तत्पुरुष
मार्गव्यय—संप्रदान तत्पुरुष नरोत्तम—अधिकरण तत्पुरुष
धर्मविमुख—अपादान तत्पुरुष भूदान—अधिकरण तत्पुरुष

● *खेल-खेल में*

द्विगु समास	**द्वन्द्व समाज**
चारदिवारी	दाल-रोटी
तिरंगा	ठंडा-गरम
चौराहा	पेड़-पौधे
चौपाया	जल-थल
चतुर्भुज	कुर्ता-धोती

अध्याय–12 संधि

1. (i) ख (ii) ग (iii) क (iv) घ (v) ग (vi) ग (vii) घ (viii) क (ix) क (x) ख (xi) क (xii) ग (xiii) ग (xiv) घ (xv) ख (xvi) ग (xvii) घ (xviii) ख (xix) क (xx) ख।

2. **संधि**— दो समान या भिन्न ध्वनियों के मेल से होने वाले विकार या परिवर्तन को संधि कहते हैं।

3. **संधि के तीन भेद होते हैं**—(1) स्वर संधि (2) व्यंजन संधि (3) विसर्ग संधि।

4. **स्वर संधि**—जब दो स्वरों का मेल होता है तो उसे स्वर संधि कहते हैं।
जैसे— वेद + अंत = वेदांत, उमा + ईश = उमेश।

5. स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं—
(i) दीर्घ संधि — परम + अर्थ = परमार्थ। (ii) गुण संधि — नर + इंद्र = नरेन्द्र
(iii) वृद्धि संधि — सदा + एव = सदैव। (iv) यण् संधि — वि + आकुल = व्याकुल
(v) अयादि संधि — नै + अक = नायक।

6. व्यंजन ध्वनि का किसी अन्य स्वर या व्यंजन से मेल होता है, तब उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
जैसे— जगत् + ईश = जगदीश।

7. व्यंजन संधि के नियम—
नियम-1. वर्ग के पहले (1) वर्ण का तीसरे (3) वर्ण में बदलाव होना। जैसे— दिक् + अंबर = दिगंबर।
नियम-2. वर्ग के पहले (1) वर्ण का पाँचवें (5) वर्ण में बदलाव होना। जैसे— सत् + मार्ग = सन्मार्ग।
नियम-3. 'त' संबंधी नियम—यदि पहले शब्द के अंत में त् आए और दूसरे शब्द के आरंभ में च, छ, ज, ट, र तथा ल आए तो त् क्रमशः च् छ् न् ट् ड् तथा व् में बदल जाता है, परंतु त् के बाद यदि श् हो तो वे च् में तथा श् छ में बदल जाता है। उसी प्रकार त् के बाद न् हो, तो त् द् में तथा ह् व में बदल जाता है। जैसे— उत् + चारण = उच्चारण।
नियम-4. 'छ' संबंधी नियम—अगर किसी स्वर में पहले 'छ' आ जाए तो 'छ' से पहले 'च' वर्ण आ जाता है। जैसे— अनु + छेद = अनुच्छेद।

नियम-5. 'म' संबंधी नियम—यदि 'म' के बाद से म तक कोई व्यंजन आए तो 'म्' उस व्यंजन के पंचम वर्ण में बदल जाता है। जैसे— सम् + तोष = संतोष।

8. **विसर्ग संधि**— विसर्ग का किसी स्वर या व्यंजन से मेल होने पर जो परिवर्तन (विकार) उत्पन्न होता है, तो वह विसर्ग संधि कहलाता है; जैसे— नि: + चय = निश्चय । अत: + एव = अतएव।

9. **स्वर संधि**—जब दो स्वरों का मेल होता है तो उसे स्वर संधि कहते हैं; जैसे— उमा + ईश = उमेश।
व्यंजन संधि—व्यंजन ध्वनि का किसी अन्य स्वर या व्यंजन से मेल होता है, तब उसे व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे— उत् + ज्वल = उज्ज्वल।

10. (क) सूर्योदय (ख) महेन्द्र (ग) विद्यार्थी (घ) प्रत्युपकार (ङ) गणेश
(च) निष्फल (छ) उल्लेख (ज) सज्जन (झ) प्रातःकाल (ञ) संतोष
(ट) स्वागत (ठ) उल्लास (ड) भोजनालय (ढ) सम्पूर्ण

11.

	स्वरसंधि भेद	**उदाहरण**
(i)	दीर्घ संधि	पर + अधीन = पराधीन
(ii)	गुण संधि	महा + ऋषि = महर्षि
(iii)	वृद्धि संधि	एक + एक = एकैक
(iv)	यण् संधि	प्रति + एक = प्रत्येक
(v)	अयादि संधि	पो + अन = पवन

12. (क) अयादि (ख) यण (ग) यद्यपि (घ) उपर्युक्त (ङ) व्यंजन

13. राजर्षि—गुण संधि वनौषध—वृद्धि संधि शिवालय—दीर्घ संधि
शयन—अयादि संधि अत्याचार—यण संधि धनुष्टंकार—विसर्ग संधि
संकलन—व्यंजन संधि

● ***खेल-खेल में***

नदी + ईश = नदीश गिरि + ईश = गिरीश वाक् + ईश = वागीश
दिवा + ईश = दिवेश रमा + ईश = रमेश विद्या + आलय = विद्यालय
भोजन + आलय = भोजनालय औषध + आलय = औषधालय शिक्षा + आलय = शिक्षालय
शिव + आलय = शिवालय

अध्याय–13 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

1. (i) ख (ii) ग (iii) क (iv) क (v) ख (vi) ग (vii) ख (viii) क (ix) ग (x) क (xi) ख (xii) ख (xiii) ख (xiv) ख (xv) घ (xvi) ख (xvii) ग (xviii) क (xix) ख (xx) घ।

2. (क) पछताना — समय पर पढ़ लेते तो हाथ मलना नहीं पड़ता।
(ख) जान की परवाह न करना — सैनिक सीमा की रक्षा के लिए जान पर खेलते हैं।
(ग) हार मानना — वीर पुरुष के सामने दुश्मन पीठ दिखाकर भाग गया।
(घ) बहुत कठिन काम — आजकल सरकारी नौकरी पाना टेढ़ी खीर है।
(ङ) पराजित होना — भारतीय वीरों के सामने चीनी सैनिकों के पाँव उखड़ गए।
(च) नींद न आना — साल भर पढ़ाई नहीं की, अब अंशुल परीक्षा के समय तारे गिन रहा है।
(छ) कार्य पूर्ण होना — बेटी की शादी करके माँ-बाप गंगा नहा लिए।
(ज) बहुत प्रिय होना — इकलौता पुत्र शुभम अपने माँ-बाप के आँखों का तारा है।

3. (क) कीचड़ उछालना। (ख) हथेली का आँवला होना।
(ग) फूटी आँख न सुहाना। (घ) दाँत काटी रोटी होना।
(ङ) टका-सा जवाब देना। (च) हाथ सिकोड़ना।

4. (क) मोहन अभी दसवीं पास भी नहीं हुआ और हवाई किले बनाने लगा है।
(ख) नरेन्द्र मोदी की राजनीति का सामना करना सूरज को दिया दिखाना है।
(ग) सतीश के सफल होने पर उसके पिताजी सिर उठाकर चलते हैं।
(घ) रेखा ने बात करके मीनू का दिमाग चाट लिया।
(ङ) मेरा दोस्त बहुत छुपा रुस्तम है।
(च) राजेश ने अपने पड़ोसी की सबके सामने पगड़ी उछाल दी।

5. (क) एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं। (ख) उँगलियों पर नचाते हैं।
(ग) गला काटते हैं। (घ) टका सा जवाब दे दिया।
(ङ) मुँह में पानी आ गया। (च) टेढ़ी खीर है।
(छ) दाँत काटी रोटी है।

6. आम जनता के बीच प्रचलित या उनके द्वारा कही गयी उक्तियाँ, लोकोक्तियाँ कहलाती हैं। जैसे— अंधों में काना राजा।

7. (क) अनपढ़ होना (ख) योग्यता से अधिक बोलना
(ग) शक्तिशाली की जीत होना (घ) अपना अच्छा व्यवहार हो तो अन्य लोगों का भी व्यवहार अच्छा होता है।
(ङ) मार से सभी डरते हैं (च) लालच अच्छी बात नहीं है

8. (क) कालाबाजारी करने वाले गिरफ्तार हो गए। सही है— जैसी करनी वैसी भरनी।
(ख) खाली तिजोरी देखकर चोरों ने कहा, खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
(ग) रमन का काम निकलने के बाद उसने संतोष के साथ ओछे की प्रीत बालू की भीत जैसा कर दिया।
(घ) अज्ञानी आदमी सभी के सामने बोलकर थोथा चना बाजे घना जैसा कार्य करता है।
(ङ) हरिद्वार न जाकर शिवालय में गंगाजल चढ़ाकर भक्त बोला— मन चंगा तो कठौती में गंगा।
(च) कम अंक लाने पर भी दीपक अपनी प्रशंसा करता रहता है। इसी को कहते हैं अधजल गगरी छलकत जाए।

9. दाल में कुछ काला होना—आशंका होना
फटे हाल होना—बहुत गरीब होना
अंगारे उगलना—बहुत कठोर बात कहना
नाक का बाल होना—अत्यंत प्रिय होना
चिराग तले अँधेरा—अपनी बुराई न दिखाई देना
अक्ल पर पत्थर पड़ना—बुद्धि भ्रष्ट होना
ईद का चाँद होना—बहुत दिनों बाद दिखाई देना
कमर कसना—दृढ़ निश्चय करना

● ***खेल-खेल में***

आँखें तरसना, आँखों से गिर जाना, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना, आँखें चार होना
आसमान सिर पर उठाना, आँखों में धूल झोंकना, आपे से बाहर होना, आग में घी डालना
आस्तीन का साँप होना, आखों का तारा होना

अध्याय–14 शब्द विचार

1. (i) घ (ii) घ (iii) ग (iv) क (v) घ (vi) क (vii) ख (viii) ग (ix) ग (x) ख।

2. (i) ख (ii) ग (iii) क (iv) ग (v) ख (vi) घ (vii) क (viii) क (ix) ग (x) ग।

3. (क) संस्कृत, हिन्दी (ख) बहुव्रीहि (ग) यौगिक, अजायब, घर (घ) देशज (ङ) तद्भव शब्द (च) पत्ता

4. किताब—अरबी नंबर—अंग्रेजी गुलाब—फारसी कुली—तुर्की
चाबी—पुर्तगाली चीकू—चीनी डेल्टा—यूनानी कर्फ्यू—फ्रांसिसी

5. **सार्थक शब्द**—मच्छर, अभिमान, करम, उत्पादन, मरकत, मजबूर, इष्ट, गुड़हल, मकसद, सन्-सन्, अरमान।
   निरर्थक शब्द—मलबत, सतोष, मचमच, करंक, ढलासको, जबेली, लबडी, रिस्का, हतसर, झपटट, गगार।
6. **परिवर्तन द्वारा सार्थक शब्द**—मतलब, संतोष, चमचम, कंकर, ढकोसला, जलेबी, रबड़ी, रिक्शा, हसरत, झटपट, गागर।
7. **शब्द**—वर्णों के सार्थक सामूहिक मेल को शब्द कहते हैं। अर्थ के आधार पर शब्द के दो भेद होते हैं—
   (क) सार्थक शब्द (ख) निरर्थक शब्द।
8. **वर्ण एवं शब्द में अन्तर**—वर्ण का कोई निश्चित अर्थ नहीं होता है, जबकि शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है। वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं, जबकि शब्दों के अर्थ के समूह से वाक्य बनते हैं।
9. (क) मुसक (ख) दोस्त (ग) कुआँ (घ) हाथ (ङ) काँटा
   (च) गाँव (छ) घोड़ा (ज) सौ (झ) खेत (ञ) ओठ।
10. (क) **तत्सम शब्द**—संस्कृत भाषा से बिना किसी परिवर्तन के आए हुए शब्द तत्सम शब्द कहलाते हैं।
    जैसे—भ्राता, दुग्ध, स्वर्ण आदि।
    तद्भव शब्द—वे शब्द जो संस्कृत भाषा से उत्पन्न तो हैं परन्तु हिन्दी में परिवर्तित रूप में सम्मिलित हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे—पौधा, कौवा, आग आदि।
    (ख) **यौगिक शब्द**—वे शब्द जो दूसरे शब्दों के योग से बनते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं।
    जैसे—राष्ट्रपिता, रसोईघर, पीलापन आदि।
    योगरूढ़ शब्द—वे शब्द जो योग या जोड़ से बने हों, परन्तु उनका अर्थ अत्यंत प्रचलित होता है, ऐसे शब्द योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे—दशानन, नीलकंठ, पंकज आदि।
    (ग) **देशज शब्द**— वे शब्द जो विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में प्रयोग किए जाते रहे हैं किंतु वर्तमान में जिनका प्रयोग हिंदी भाषा में भी व्यापक रूप से हो रहा है, **देशज शब्द** कहलाते हैं; जैसे—पगड़ी, गाड़ी।
    विदेशी शब्द— विदेशी जातियों के संपर्क में आने से उनकी भाषाओं के बहुत से शब्द आधुनिक हिन्दी में प्रयोग किए जाने लगे हैं। ऐसे शब्दों को **विदेशी** अथवा **विदेशज शब्द** कहा जाता है।
    (घ) **विकारी शब्द**—ऐसे शब्द जिसमें निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। ये शब्द प्रायः लिंग, वचन, काल एवं कारक के आधार पर परिवर्तित होते हैं। ऐसे शब्द विकारी शब्द कहलाते हैं।
    जैसे— बड़ा, बड़े, बड़ी, आता, आते, आती।
    अविकारी शब्द—ये शब्द विकारी शब्द के विपरीत होते हैं अर्थात वे शब्द जिनमें किसी भी अवस्था में परिवर्तन नहीं होता, अविकारी शब्द कहलाते हैं। जैसे—बाहर, जल्दी, धीरे-धीरे।

● *खेल-खेल में*

अर्ध तत्सम	**संकर शब्द**
अग्या	कामधंधा
कारज	रेलगाड़ी
अगिन	लाठीचार्ज
बृच्छ	वर्षगाँठ
अच्छर	हवादार

अध्याय–15 पर्यायवाची शब्द

1. (i) क (ii) क (iii) क (iv) ग (v) घ (vi) क (vii) ग (viii) घ (ix) क (x) घ (xi) घ (xii) क (xiii) क (xiv) ख (xv) ग (xvi) क (xvii) ख।

2. वृक्ष—पेड़, तरु, विटप, पादप।
सर्प—साँप, नाग, विषधर, भुजंग।
बिजली—विद्युत, चपला, तड़ित, सौदामिनी।
मयूर—मोर, करी, शिखी, सारंग।
3. पृथ्वी—धरती, धरा, वसुंधरा, वसुधा
आकाश—नभ, गगन, अम्बर, व्योम
भ्रमर—भौंरा, मधुकर, अलि, द्विरेफ
पानी—जल, नीर, अंबु, तोय
4. कमल—जलज, पंकज, सरोज, नीरज
चंद्र—शशि, राकेश, इंदु, मयंक
घर—सदन, गेह, भवन, धाम
पवन—वायु, समीर, हवा, अनिल
5. पक्षी—विहग, खग, नभचर
घोड़ा—अश्व, तुरग, घोटक
6. वन—जंगल, अरण्य, कानन
समुद्र—सागर, जलधि, उदधि
अनाज—अन्न, धान्य, खद्यान्न
अनाथ—निराश्रित, बेसहारा, लावारिस
भौंरा—भ्रमर, मधुकर, अलि
7. नदी—सरिता, तटिनी, आपगा
उल्लू—उलूक, रात्रिचर, निशाचर
ओला—हिमगुलिका, हिमोपल, उपल
क्रोध—कोप, गुस्सा, आक्रोश
कुत्ता—श्वान, सारमेय, सुनक
8. सुगम—सरल, आसान, साधारण
गाय—धेनु, सुरभि, गौ
गृह—सदन, निकेतन, कुटीर
मयंक—शशि, इंदु, राकेश
प्रेम—ममता, प्यार, वात्सल्य
रुदन—विलाप, क्रंदन, रोना
इच्छा—आकांक्षा, अभिलाषा, कामना
मिलाप—मिलन, भेंट, संयोग
9. (क) सूर्य (ख) मंदिर (ग) अमृत (घ) निशाचर (ङ) पानी (च) मधु

● *खेल-खेल में*

(क) धनुष, चाप, शरासन, कोदंड (ख) अश्व, घोड़ा, तुरंग, घोटक
(ग) तलवार, असि, करवाल, खड्ग (घ) पेड़, वृक्ष, तरु, विटप

अध्याय–16 विलोम शब्द

1. (i) घ (ii) ग (iii) ख (iv) ख (v) ख (vi) क (vii) ख (viii) ग (ix) ग (x) ख (xi) क (xii) ग (xiii) ख (xiv) क (xv) ख।
2. (क) व्यय (ख) हिंसा (ग) निंदा (घ) निर्यात (ङ) असत्यवादी (च) बायीं।

3. आशा—निराशा नूतन—पुरातन संयोग—वियोग क्रूर—दयालु
संधि—विग्रह सार्थक—निरर्थक संतोष—असंतोष मानव—दानव

4. (क) निराशा (ख) पुरातन (ग) वियोग (घ) दयालु (ङ) विग्रह
(च) निरर्थक (छ) असंतोष (झ) दानव।

● *खेल-खेल में*

राजा - रंक गरीब - अमीर बालक - बालिका
आकाश - पृथ्वी दानी - भिखारी।

अध्याय–17 श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

1. (i) घ (ii) ख (iii) ग (iv) क (v) ग (vi) क (vii) क (viii) ग (ix) घ (x) ग।

2. (क) (i) सर्वदा — समय सर्वदा एक-सा नहीं रहता।
(ii) सर्वथा — मनुष्य सर्वथा एक जैसा नहीं रहता।
(ख) (i) कठोर — ऐसी परुष बातें शोभा नहीं देतीं।
(ii) आदमी — पुरुष होकर डर रहे हो।
(ग) (i) अनाज — पेट में अन्न पड़े तो चेहरे पर चमक आए।
(ii) दूसरा — तुम अन्य की बातों पर ध्यान मत दिया करो।
(घ) (i) पहाड़ — ये नग बहुत ऊँचा है।
(ii) सर्प — नाग को परेशान नहीं करना चाहिए।

3. (क) बराबर — सामग्री (ख) अंधा — वीर (ग) दुःख — चाव
(घ) रास्ता — रोगी को दिया जाने वाला हल्का भोजन (ङ) ओर — अवस्था
(च) गरीब — दिवस (छ) पका—पकने का भाव, पक्का— कच्चा का उल्टा, पका हुआ
(ज) दूरी का माप — खजाना (च) जैन भिक्षु - सुनना।

4. (क) बाघ (ख) सूर (ग) पथ्य (घ) दिन (ङ) काठ
(च) अंत (छ) प्रमाण (ज) ओर

● *खेल-खेल में*

जामन - दूध जमाने की खटाई, जामुन - एक फल। कटि - कमर, कीट - कीड़ा। वदन - मुख, वदन - शरीर। मूल - जड़, मूल्य - कीमत। शुल्क - फीस, शुक्ल - सफेद। दिन - दिवस, दीन - गरीब। मातृ - माता, मात्र - केवल । शंकर - महादेव, संकर - मिश्रित । प्रसाद - कृपा, प्रासाद - महल। जात - पुत्र, जाति - गोत्र।

अध्याय–18 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1. (i) ग (ii) ग (iii) क (iv) ख (v) ग (vi) ग (vii) घ (viii) घ (ix) क (x) ग (xi) क (xii) ग (xiii) ख (xiv) ख (xv) क।

2. (क) निरर्थक (ख) अनादि (ग) शुभचिंतक (घ) दम्पत्ति (ङ) वैष्णव
(च) सर्वज्ञ (छ) दर्शनीय (ज) जितेन्द्रिय।

3. (क) जो आशा से परे हो। (ख) आयोजन करने वाला।
(ग) जो मधुर बोलता हो। (घ) जो गंदा रहता हो।
(ङ) शिव के उपासक। (च) अर्थ या धन से संबंधित।

(छ) उपकार के बदले उपकार करना। (ज) तर्क की कसौटी या सही होना।
(झ) हमेशा से रहने वाला। (ञ) चार महीनों का समूह।

4. अभिनेता—अभिनय करने वाला पुरुष
कृतज्ञ—किसी के उपकार को मानने वाला
शास्त्रज्ञ—शास्त्रों को जानने वाला
दुराग्रह—अनुचित बात के लिए आग्रह
स्वावलंबी—जो अपने ही सहारे रहता है
सत्याग्रह—सत्य के साथ किया गया आग्रह
चतुर्वेदी—चारों वेदों का ज्ञाता
विधिक—कानून के अनुसार सही

5. (क) हितैषी (ख) चक्रधारी (ग) आस्तिक (घ) बंजर (ङ) अद्वितीय (च) घृणित।

● ***खेल-खेल में***

1. दुर्लभ 2. शाश्वत 3. अल्पज्ञ 4. मितव्ययी 5. रेखांकित 6. पठनीय।

अध्याय–19 अनेकार्थक शब्द

1. (i) ग (ii) ग (iii) क (iv) ग (v) क (vi) क (vii) ख (viii) ग (ix) क (x) ख (xi) घ (xii) ग (xiii) क (xiv) ख (xv) क।

2. (क) सिक्का, आसन (ख) विष्णु, बन्दर (ग) चाल, मोक्ष (घ) कुशल, जल
(ङ) रंग, अक्षर (च) लक्ष्मी, शोभा (छ) शहद, मीठा (ञ) प्रकार, रहस्य।

3. (क) गुरु हमें पढ़ाते व सिखाते हैं। रोहन सोहन से गुरु है।
(ख) हम पाँच वर्ष पूर्व यहाँ आए थे। सूर्योदय पूर्व में होता है।
(ग) रतन टाटा के पास बहुत अर्थ है। तुम्हारी बात का कोई अर्थ नहीं है।
(घ) चलो ! उत्तर की ओर चलते हैं। समझदार व्यक्ति, सोच-विचार कर उत्तर देते हैं।
(ङ) कलियुग में व्यक्तियों के कई वर्ण हैं। राम के लिखे वर्ण बहुत साफ हैं।
(च) भारत के तीनों दल सम्मानीय हैं। पतझड़ में पेड़ से दल गिरने लगते हैं।

4. (क) रेत (ख) घोड़ा (ग) कोयल (घ) धूल (ङ) पहचान (च) हेतु

5. द्विज—पक्षी, वैश्य, क्षत्रिय, ब्राह्मण
नग—वृक्ष, पर्वत, नगीना, अदद
पद—स्थान, पैर, गीत, छंद के चरण
मंगल—वीर, शुभ, सौभाग्य, एक ग्रह
शिखा—चोटी, किरण, ज्वाला
सुरभि—सुगंध, वसंत, कामधेनु
हलधर—किसान, बैल, बलराम
हेम—सोना, हिम, जल धतूरा

6. (क) स्नेह (ख) हेम (ग) हार, हार (घ) दूध, जल, अन्न
(ङ) समय (च) बादल, हथौड़ा

● ***खेल-खेल में***

पतंग—सूर्य, पक्षी
आम—सामान्य, एक फल
फल—परिणाम, तीर का अगला भाग
धन—जोड़, रुपया-पैसा

अध्याय–20 विराम-चिह्न

1. **विराम चिह्न**—लिखते समय विराम अवस्था को प्रकट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, विराम चिह्न कहलाते हैं।

2. **योजक चिह्न**—वाक्यों में जब समान या विपरीत शब्द एक साथ आते हैं तो उन शब्दों के बीच योजक चिह्न लगाया जाता है। जैसे— माता - पिता, छोटा - बड़ा।
   निर्देशक चिह्न—वाक्य पूरा होने के पश्चात् जब उससे संबंधित उदाहरणों की ओर संकेत या निर्देश किया जाता है, तब निर्देशक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे— महात्मा गाँधी ने कहा - अहिंसा परम धर्म है।
3. (क) आज हम घर वापस क्यों नहीं चल सकते?
   (ख) सुभाषचंद्र बोस ने कहा—"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"
   (ग) अरे! आज ही निकल पड़े तुम।
   (घ) बच्चा बोला—"आज मोना, मैं और आप बैडमिंटन खेलेंगे।"
   (ङ) तुम एल.एल.बी. क्यों नहीं कर लेते?
   (च) वाह! मजा आ गया।
4. (क) विस्मयादिबोधक चिह्न (ख) एकल उद्धरण चिह्न (ग) प्रश्नवाचक चिह्न
   (घ) विवरण चिह्न (ङ) योजक चिह्न (च) निर्देशक चिह्न
5. बरसात की एक अँधेरी रात थी। एक आदमी साधारण कपड़े पहने, नगर के तंग रास्तों में से चौकन्ना होकर आगे बढ़ रहा था। घोड़े पर सवार वह जैसे ही एक गली में मुड़ा कि पीछे से ये शब्द उसके कानों में पड़े— ''रुक जा।'' वह बिना कुछ सुने, रुके, अपनी चाल चलता रहा। आगे पलभर में दस-बारह डाकुओं ने उसे घेर लिया। मोटा-तगड़ा उनका सरदार गरजकर बोला- ''अबे सुनाई नहीं देता। उतर घोड़े से ।'' फिर दो डाकुओं ने उसे खींचकर नीचे उतार दिया। तभी बिजली चमकी तो उसका सफेद रंग का सुंदर घोड़ा देखकर बोला— ''मालदार लगता है।''

● ***खेल-खेल में***

छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं करें।

अध्याय–21 पत्र–लेखन

1. आदर्श विद्या मंदिर, जयपुर
   दिनांक 22-09-20_ _
   पूज्य माताजी
   सादर चरण स्पर्श
   आशा है, आप सानंद होंगी। मेरी पढ़ाई अच्छी चल रही है। आपके भेजे गए पैसे खर्च हो गए हैं या यूँ कहूँ कि फिजूल में खर्च हो गए। इस फिजूलखर्ची को रोका जा सकता था, लेकिन कुछ दोस्तों की जिद की वजह से यह फिजूलखर्ची हो गई। इसके लिए मैं बहुत शर्मिंदा हूँ और आपसे क्षमा माँगता हूँ। भविष्य में ऐसी गलती दुबारा न हो, इसका ध्यान रखूँगा। पढ़ाई-खर्च के लिए मुझे एक हजार रुपयों की आवश्यकता है। अस्तु 1000 रुपये मेरे खाते में डलवा दें, ताकि मैं समय पर पुस्तकें खरीद कर पढ़ाई पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकूँ।
   पिता को चरणस्पर्श तथा ईसा को मधुर प्यार
   आपका आज्ञाकारी पुत्र
   प्रत्यूष

2. प्रतिष्ठा में,
   संपादक महोदय
   हिन्दुस्तान टाइम्स
   इन्दौर
   दिनांक 17-06-20_ _

विषय— समाचार पत्र में रचना प्रकाशित करने के संबंध में

महोदय

निवेदन है कि मैं आपके सम्मानित समाचारपत्र हिन्दुस्तान टाइम्स का नियमित पाठक हूँ। मेरी कहानी, कविता तथा सम-सामायिक विषयों पर लिखने की रुचि रही है। मेरी अनेक रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी हैं।

मान्यवर, आज की ज्वलंत समस्या 'बेरोजगारी : कारण और समाधान' विषय पर एक लेख मैंने आपके पास भेजा है। इसे अपने समाचार पत्र में स्थान देने की कृपा करें। आपकी अति कृपा होगी

धन्यवाद सहित

भवदीय

रामकुमार 'चंचल'

3. सेवा में, दिनांक 16-11-20_ _

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय

मर्यादा उच्च माध्यमिक विद्यालय

रणजीत नगर, भोपाल

विषय— गणित की अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था के संबंध में

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि अर्द्धवार्षिक परीक्षा संपन्न हो चुकी है, इसका परिणाम भी आ चुका है। अधिकांश छात्रों ने गणित विषय में औसत से कम अंक ही प्राप्त किए हैं। अत: इस संबंध में मेरी आपसे प्रार्थना है कि गणित विषय की अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था करने की कृपा करें, ताकि आगामी वार्षिक परीक्षा में हम सभी छात्र बेहतर परिणाम दे सकें। आशा है कि आप मेरे निवेदन पर सहानुभूतिपूर्ण विचार करेंगे।

धन्यवाद सहित,

सादर,

आपका शिष्य

सौभाग्य प्रजापति

कक्षा-7 'अ'

4. सेवा में,

अधीक्षण अभियंता

विद्युत विभाग

मानेसर

दिनांक 29-07-20_ _

विषय— बार-बार अघोषित बिजली कटौती के संदर्भ में

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं राजेश शर्मा आपका ध्यान मानेसर क्षेत्र में हो रही अघोषित बिजली कटौती की ओर दिलाना चाहता हूँ। इस क्षेत्र की बिजली व्यवस्था चौपट हो चुकी है। दिन-रात में कुल मिलाकर सात-आठ घंटे लाइट आती है। बार-बार बिजली कटौती से क्षेत्र के निवासियों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। आपसे निवेदन है कि इस समस्या को त्वरित संज्ञान में लेकर आपूर्ति सुनिश्चित करने की व्यवस्था करें। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद

भवदीय

राजेश शर्मा

5. प्रिय मित्र डेविड

नमस्ते!

आशा है कि आप स्वस्थ और मस्त होंगे। मैं आपको इस पत्र के माध्यम से भारत आने का निमंत्रण दे रहा हूँ। भारत एक बहुत ही खूबसूरत और विविधताओं से भरा देश है। यहाँ की संस्कृति, परंपराएँ और यहाँ के लोग बहुत ही मिलनसार हैं। यहाँ अनेक ऐतिहासिक स्थल देखने योग्य हैं। इसके अलावा यहाँ खान-पान और पहनावे में भी अनोखी विविधता है।

मुझे विश्वास है कि आपको भारत आकर बहुत अच्छा लगेगा और जब वापस यहाँ से अमेरिका जाओगे तो अपने साथ यहाँ की मधुर यादें ले जाओगे। मैं भारत में आपके आगमन के स्वागत में हूँ।

उत्तर की प्रतीक्षा में
आपका मित्र
हरप्रीत सोढी
नई दिल्ली (भारत)

अध्याय–22 संवाद लेखन

1. समय के महत्व पर माँ–पुत्र के बीच संवाद

माँ – वंश बेटा, उठो, सुबह हो गई। देखो, सूरज निकल आया है।
वंश – मम्मी थोड़ी देर और सोने दो, छुट्टी का दिन है।
माँ – छुट्टी है तो क्या हुआ? समय तो बीत ही रहा है। समय का महत्व जानो और उसका सदुपयोग करो।
वंश – समय का महत्व, सदुपयोग! मैं समझा नहीं।
माँ – बेटा समय का सही इस्तेमाल करना चाहिए। समय बहुत कीमती है। एक बार जो समय बीत गया, वह लौटकर नहीं आता।
वंश – लेकिन मैं क्या करूँ। अभी तो कुछ काम भी नहीं है।
माँ – काम नहीं है तो भी समय का सदुपयोग कर सकते हो। जैसे– अपनी पसंदीदा पुस्तक पढ़ो या दोस्तों के साथ खेलो या कुछ रचनात्मक कामों में समय लगाओ।
वंश – ठीक है, मम्मी, मैं समझ गया। मैं अब समय व्यर्थ नहीं नष्ट करूँगा।
माँ – बहुत अच्छा। खुश रहो बेटा।

2. अपने आस-पास की स्वच्छता बनाए रखने के लिए छात्रों में परस्पर संवाद।

कबीर – हमारे यहाँ इतनी ज्यादा गंदगी क्यों है ?
कमल – क्योंकि कमल हम परिवेश को स्वच्छ रखने पर समुचित ध्यान नहीं देते हैं।
कबीर – मैं एक नागरिक के रूप में क्या कर सकता हूँ?
कमल – घरेलू कचरे को सड़क के किनारे रखे हुए कचरा पात्रों में डालना चाहिये। हमें अपने घर के सामने के सार्वजनिक मार्ग (सड़क) को साफ रखना चाहिये। हमें प्रत्येक रविवार या अन्य अवकाश के दिन एक घण्टा सामुदायिक सफाई के लिये अर्पित करना चाहिये। हमें सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी करने से बचना चाहिये। हमें दीवारों, पगडंडियों और सड़कों पर थूकने से अपने आप को रोकना चाहिये। हमें खुली जगह में मूत्र व मल त्याग करने से बचना चाहिये।
कबीर – एक नागरिक के रूप में मुझे क्या नहीं करना चाहिये?
कमल – हमें सड़कों पर कूड़ा–करकट नहीं फेंकना चाहिये। हमें बस व रेल के डिब्बों में छिलके व अन्य कचरे से गंदगी नहीं फैलानी चाहिए। हमें प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। हमें दीवारों पर पोस्टर नहीं चिपकाने चाहिये। हमें बचा हुआ भोजन (झूठन) नहीं फेंकना चाहिये।
कबीर – क्या भारत सरकार ने स्वच्छ भारत के लिए कोई कार्य–योजना शुरू नहीं की है ?
कमल – अरे ! हाँ, भारत सरकार ने 'स्वच्छ भारत अभियान' शुरू किया है। ग्रामीण व शहरी भारत को आने वाले पाँच वर्षों में साफ बनाना है।
कबीर – यदि हम सब नागरिक इन नियमों का पालन करें तो हम स्वच्छ भारत के लिये योगदान कर सकते हैं।
कमल – हाँ, मैं आशा करता हूँ, विद्यार्थी और नागरिक भारत की स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए भरसक प्रयास करेंगे।

3. तंबाकू और धूम्रपान के दुष्प्रभावों पर शिक्षिका और छात्रों के बीच संवाद

शिक्षिका – नमस्ते बच्चो, आज हम तंबाकू और धूम्रपान के हानिकारक प्रभावों पर चर्चा करेंगे।

सभी छात्र– जी मैम, बहुत अच्छा।

शिक्षिका – क्या आप जानते हैं कि यह स्वास्थ्य के लिए कितना बुरा है। तम्बाकू और धूम्रपान का हमारे मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे कैंसर जैसी बीमारी भी हो जाती है। फेफड़े खराब हो जाते हैं। इसके अलावा अन्य अनेक रोग शरीर को दुर्बल बना देते हैं।

एक छात्र– इसलिए मैम हमारे स्कूल के बाहर बोर्ड लगा है, जिसमें धूम्रपान न करने की चेतावनी लिखी है।

शिक्षिका– बहुत सही! तो बच्चो हम सभी संकल्प लेते हैं कि भविष्य में हम कभी धूम्रपान तथा तंबाकू का उपयोग नही करेंगे।

एक छात्रा– साथ ही, जो भी ऐसा करता है, उसे इसकी हानियाँ बताकर इसे छोड़ने के लिए कहेंगे।

शिक्षिका – यह तो बहुत अच्छी बात है। हम सब इसका ध्यान रखेंगे।

4. मोबाइल के अधिक इस्तेमाल से परेशान दो मित्रों के बीच संवाद

अमित – मित्र! मुझे लग रहा है कि आजकल मैं मोबाइल फोन का उपयोग अधिक कर रहा हूँ।

रवि – सही कह रहे हो, दोस्त, मुझे भी लगता है कि मोबाइल मुझसे भी अधिक चिपक गया है। बीच-बीच में जब भी टाइम मिलता है, मैं मोबाइल देखने लग जाता हूँ।

अमित – मोबाइल के कारण पढ़ाई और नींद दोनों ही नहीं हो पाती हैं।

रवि – मेरी भी यही स्थिति है, मोबाइल की बजह से मेरा तो सिर भी दर्द करने लगा है।

अमित – मेरी अध्यापिका जी बता रही थीं कि ज्यादा देर तक मोबाइल देखने से चिंता और अवसाद भी हो जाते हैं।

रवि – सही कहा, और हाँ रात को सोने से पहले मोबाइल देखना भी गलत है।

अमित – मुझे लगता है कि हमें मोबाइल के अधिक उपयोग से बचना चाहिए।

रवि – बहुत बढ़िया विचार है। चलो आज से ही शुरू करते हैं।

5. अध्यापक व छात्रों के बीच ग्लोबल वार्मिंग पर संवाद

शिक्षक – आज हम ग्लोबल वार्मिंग के बारे में चर्चा करेंगे। यह एक ऐसा विषय है, जिस पर सभी को जागरूक होना चाहिए।

छात्र – सर, ग्लोबल वार्मिंग क्या है और यह कैसे होता है?

शिक्षक – आजकल तुम मौसम में बदलाव देख रहे हो, गर्मी बहुत बढ़ गई है। यह ग्लोबल वार्मिंग ही है। इसका प्रमुख कारण वनों की कटाई, कोयला, तेल जैसे ईंधनों का अधिक प्रयोग तथा बढ़ती औद्योगिक गतिविधियाँ हैं।

छात्र – इन सबका क्या प्रभाव होता है?

शिक्षक – इन सब गतिविधियों से ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन होता है, जो पृथ्वी के तापमान को बढ़ा रहा है।

छात्र – ग्लोबल वार्मिंग के और क्या दुष्परिणाम हैं?

शिक्षक – मौसम में बदलाव, समुद्र के स्तर का बढ़ना, पारिस्थितिकी असंतुलन तथा मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव आदि अनेक दुष्परिणाम होते हैं।

छात्र – ग्लोबल वार्मिंग से कैसे बचा जा सकता है?

शिक्षक – सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा को बढ़ावा, वृक्षारोपण-संरक्षण, प्लास्टिक पर पाबंदी तथा कचरा रिसायकिल करने जैसे उपाय शामिल हैं।

छात्र – इस महत्वपूर्ण जानकारी के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद सर जी।

6. क्रिकेट मैच के संबंध में दो मित्रों के बीच संवाद

उत्कृष्ट – सुयश क्या तुमने कल विद्यालय में हुए क्रिकेट मैच को देखा था?
सुयश – हाँ देखा था, क्या शानदार मैच था? तुम्हारी टीम ने बहुत अच्छा खेला।
उत्कृष्ट – हाँ विशु की बल्लेबाजी तो कमाल की थी। उसने एक शतक भी ठोका।
सुयश – एक बार तो लगा कि तुम्हारी टीम लक्ष्य पाने में पिछड़ रही है।
उत्कृष्ट – सही कह रहे हो। दूसरी टीम के दो गेंदबाज सुहेल और मानव ने अपनी गेंद से बल्लेबाजों को बहुत परेशान किया। दोनों ने मिलकर हमारी टीम के पाँच खिलाड़ी पबेलियन भेज दिए।
सुयश – हाँ, वही तो लेकिन मित्र आखिरी ओवर में आपके द्वारा लगाए तीन छक्कों की मदद से आपने टीम को जीत दिला दी।
उत्कृष्ट – सच में, इस मैच में बहुत रोमांच रहा था। चलो अगले मैच की तैयारी करते हैं।
सुयश – ठीक है मित्र, चलता हूँ।

7. डाकिये और बूढ़े व्यक्ति के बीच संवाद

वृद्ध व्यक्ति – क्या आप ही इस क्षेत्र की डाक बाँटते हैं?
डाकिया – जी, बाबूजी बताइए। आपकी क्या समस्या है?
वृद्ध व्यक्ति – मुझे पिछले महीने मुझे मेरा मनीऑर्डर नहीं मिला।
डाकिया – मनीऑर्डर कहाँ से आना था?
वृद्ध व्यक्ति – मेरे पुत्र ने मुझे भेजा था, जो मुझे नहीं मिला।
डाकिया – ओह! यह तो ठीक नहीं है।
वृद्ध व्यक्ति – क्या आप देख सकते हैं कि वह कहाँ है?
डाकिया – ठीक है, मैं पोस्ट आफिस में जाकर पता करता हूँ।
वृद्ध व्यक्ति – जी बहुत-बहुत धन्यवाद।

8. रिक्शा चालक और यात्री के बीच संवाद

यात्री – भैया! चौक बाजार तक चलोगे।
रिक्शा चालक – जी साहब, चलूँगा।
यात्री – कितना किराया लोगे?
रिक्शा चालक – पचास रुपये दे देना साहब।
यात्री – पचास रुपये तो बहुत अधिक हैं। पिछली बार मैं चालीस रुपये में गया था।
रिक्शा चालक – नहीं साहब, महँगाई हर रोज बढ़ रही है। खर्चा भी पूरा नहीं होता। फिर चौक बाजार तक जाने में जाम भी बहुत मिलता है।
यात्री – चलो ठीक है, पैंतालीस रुपये ले लेना।
रिक्शा चालक – ठीक है, साहब, बैठिए। मैं चलता हूँ।

अध्याय–23 कहानी लेखन

1. सर्प और किसान

एक गाँव में एक किसान रहता था। गाँव से थोड़ी दूर पर उसका खेत था। जिसमें अनाज उगाकर वह अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। एक बार ठंड के दिनों में वह अपने खेत पर गया। वहाँ उसने देखा कि ठंड के कारण एक साँप अकड़ा पड़ा था। ऐसा लग रहा था कि कुछ ही देर में वह मर जाएगा। किसान बहुत दयालु था। वह साँप को ठंड से मरते हुए नहीं देख सकता था। कोई उपाय न देख उसने साँप को उठाकर अपने सीने से चिपका लिया। किसान से गर्मी

पाकर साँप को कुछ चेतना आई। धीरे-धीरे गर्मी पाकर साँप सही हो गया। अचानक उसने अपने विषैले दाँतों से किसान को ही काट लिया। थोड़ी ही देर में किसान मर गया।

सीख—किसी बुरे व्यक्ति पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

2. **सारस और लोमड़ी**

एक जंगल में सारस और लोमड़ी रहते थे। एक दिन लोमड़ी ने सारस को अपने घर दावत पर बुलाया। लोमड़ी ने दावत में खीर बनाई और एक प्लेट में परोसी। लोमड़ी तो अपनी जीभ से प्लेट से खीर खाती रही, लेकिन सारस प्लेट से खीर नहीं खा सका। सारस भूखा ही लौट आया। अगले दिन सारस ने लोमड़ी से कहा—बहन लोमड़ी! आज मेरे घर पर दावत है, तुम आ जाना। लोमड़ी खुश होकर सारस के घर पहुँची। सारस ने भी बढ़िया खीर बनाई और उसे सुराही में रखकर बोला—आओ बहन खीर का आनंद लो। लोमड़ी सुराही से खीर नहीं खा सकी। सारस चोंच से पूरी खीर खा गया और लोमड़ी से बोला—बहन तुमने जो मजाक मेरे साथ किया, अब उसका आनंद लो। लज्जित लोमड़ी दबे पाँव वहाँ से चली आई।

शिक्षा—हमें दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करना चाहिए, जो हमें अपने लिए पसंद न हो।

3. **गुड़ की मिठास**

एक गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। उसका एक सात वर्ष का नाती था, जो अपनी दादी के साथ रहता था। उस बच्चे को गुड़ खाने की लत थी। उसकी इस आदत से परिवार के सभी लोग परेशान थे। एक दिन वह वृद्धा माँ उसे गाँव के बाहर एक मंदिर पर ले गई। वहाँ एक साधु रहते थे। बुढ़िया ने कहा कि महाराज गुड़ की मिठास इस बच्चे की कमजोरी है। कृपया आप इसे समझाएँ कि यह अधिक गुड़ न खाया करे। संत ने बुढ़िया से कहा कि एक सप्ताह बाद आना। एक सप्ताह पूरा होने के बाद वह बुढ़िया उस बालक को लेकर संत के पास गई। साधु ने बालक को अपने पास बुलाकर, सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—बेटे अधिक गुड़ खाना अच्छी बात नहीं है। अधिक गुड़ मत खाया करो। यह कहकर उसने बुढ़िया को विदा किया। घर आकर कुछ ही दिनों में बालक की गुड़ खाने की आदत छूट गई। बुढ़िया को बहुत आश्चर्य हुआ और वह उस साधु के पास गई और कहा— महाराज जी! यह बात तो आप पहले भी कह सकते थे। एक सप्ताह बाद क्यों बुलाया। संत ने कहा—माताजी! गुड़ की मिठास मेरी भी कमजोरी थी। जब मैंने स्वयं गुड़ खाना छोड़ दिया, तब ही मैंने बालक को गुड़ छोड़ने के लिए कहा।

शिक्षा—अच्छी बातों को पहले अपने जीवन में उतारना चाहिए।

4. **गधे की मूर्खता**

एक व्यापारी था। उसके पास एक गधा था, जिस पर सामान लादकर वह बाजार में बेचने ले जाता था। शहर जाने के रास्ते में एक नदी थी, जिसे व्यापारी को पार करना पड़ता था। एक बार नदी पार करते समय अचानक गधा का पैर फिसल गया। पानी में गिरने से उस पर नमक की बोरी का कुछ नमक पानी में घुल गया। जब गधा खड़ा हुआ तो वजन हल्का हो गया। गधा बड़ा प्रसन्न हुआ। अब तो वह रोजाना जान-बूझकर नदी में फिसलता और अपना वजन कम कर लेता। एक दिन व्यापारी ने गधे पर रुई का बोरा लादा। आदतन गधा नदी में पहुँचते ही फिसल गया और देर तक पड़ा रहा। रुई पानी से गीली होकर और भारी हो गया। व्यापारी ने डंडे मार-मार कर गधे को उठाया। रुई में पानी भर जाने से वजन बहुत अधिक हो गया था। एक-एक कदम चलना गधे को भारी पड़ रहा था। उस दिन से गधे ने नदी में फिसलना छोड़ दिया।

सीख—कोई भी कार्य सोच-समझकर करना चाहिए।

5. **गोपू की गाय**

एक गाँव में गोपू नाम का किसान रहता था। उसके पास एक गाय थी, जिसका नाम गोपी था। गोपू अपनी गाय की बहुत अच्छे से देखभाल करता था। गोपू की गाय बहुत सीधी थी, छोटे-छोटे बच्चे भी उसके साथ खेलते रहते थे, लेकिन वह कभी किसी को चोट नहीं पहुँचाती थी। एक बार गाँव के कुछ स्त्री-पुरुष-बच्चे बस में सवार होकर देवी माँ के दर्शन

के लिए जा रहे थे। सुहावना मौसम था। हल्की–हल्की बूँदें गिर रही थीं। जैसे ही बस गाँव से निकल कर सड़क पर पहुँची। गोपू की गाय दौड़कर आई और बस के सामने खड़ी हो गई। बहुत हटाने पर भी वह हटी नहीं। थोड़ी ही देर में जोर की आँधी आई और सड़क किनारे खड़ा बरगद का विशालकाय वृक्ष टूटकर सड़क पर गिर गया। यह देखकर सभी लोग कहने लगे कि गोपू की गाय ने हम सबको बचा लिया। गोपू की गाय अब पूरे गाँव की गाय हो गई थी। हर घर से उसके खाने के लिए कुछ न कुछ आता था। गोपू अपनी गाय से बहुत प्रसन्न था।

शिक्षा—पशु–पक्षियों में भी संवेदना होती है। हमें इनकी सुरक्षा और देखभाल करनी चाहिए।

6. चिड़िया का बदला

एक जंगल में पेड़ पर एक चिड़िया का घोंसला था, जिसमें वह अपने दो छोटे बच्चों के साथ रहती थी। एक हाथी आया और उसने चिड़िया का घोंसला अपनी सूँड़ से तोड़कर जमीन पर गिरा दिया। उसके दोनों बच्चे मर गए। चिड़िया बहुत दुखी हुई। उसने हाथी से बदला लेने की सोची। वह अपने मित्रों के पास गई और अपना दुख बताया। सभी ने मिलकर हाथी को सबक सिखाने का निश्चय किया। जब हाथी बैठा था, तो भौंरे ने उसके कान के पास आकर गुनगुनाना शुरू कर दिया। जल्दी ही हाथी को नींद आ गई। तभी कठफोड़वे ने उसकी आँखें फोड़ दीं। अन्धा हाथी प्यास से व्याकुल हो गया। एक गड्ढे के पास चिड़िया का मित्र मेंढक टर्र–टर्र टर्राने लगा। हाथी वहाँ पानी समझकर गया और गड्ढे में गिरकर मर गया। इस प्रकार चिड़िया ने बलशाली हाथी को मारकर अपना बदला पूरा किया।

सीख—हमें बेवजह किसी को हानि या नुकसान नहीं करना चाहिए।

7. पर्वत का घमंड

एक जंगल में एक विशाल पर्वत था। एक दिन उस विशाल पर्वत ने जानवरों को देखा, जंगल को देखा और फिर खुद को देखा। उसे अपने आकार पर बहुत घमंड हुआ। उसने कहा—मैं सबसे शक्तिशाली हूँ, मैं तुम्हारा ईश्वर हूँ। पर्वत की यह बातें सुनकर सभी जानवरों को बहुत गुस्सा आया। घोड़े ने आगे बढ़कर कहा—ओ घमंडी पर्वत, अपने आप पर इतना घमंड मत कर। एक क्षण में तुम्हें दौड़कर पार कर सकता हूँ। लेकिन घोड़ा लड़खड़ाकर गिर गया। पर्वत दिल खोलकर हँसा। इसी तरह हाथी, ऊँट, जिराफ सभी ने कोशिश की पर वे पहाड़ का कुछ नहीं बिगाड़ पाए। अब सभी जानवरों को अपना दोस्त चूहा याद आया। चूहा पर्वत के पास आया और घमंडी पर्वत को चुनौती दी। घमंडी पर्वत ने चूहे का खूब मजाक उड़ाया। चूहे ने मुस्कराते हुए पर्वत में छेद बनाना प्रारंभ किया। अन्य चूहों ने भी पर्वत में छेद करना चालू कर दिया। घमंडी पर्वत घबरा गया और उसने सभी जानवरों से माफी माँगी। इस तरह पर्वत के घमंड को एक छोटे चूहे ने तोड़ दिया।

सीख—सभी का सम्मान करना चाहिए, कोई छोटा–बड़ा नहीं होता, सबका अपना महत्व होता है।

8. दोस्ती की परख

यह कहानी एक गाँव में रह रहे दो लड़कों अजय और विजय के बारे में है। वे आपस में दोनों दोस्त थे। एक ही विद्यालय और एक ही कक्षा में पढ़ते थे। विद्यालय जाने के रास्ते में एक जंगल पड़ता था। एक दिन की बात है, स्कूल से पढ़कर जब दोनों मित्र लौट रहे थे, तो जंगल के रास्ते में कुछ दूरी पर उन्हें एक भालू दिखाई दिया। अजय भागकर पेड़ पर चढ़ गया परंतु विजय को पेड़ पर चढ़ना नहीं आता था, उसने अपने मित्र से पेड़ पर चढ़ने में सहायता माँगी, लेकिन अजय ने कोई सहायता नहीं की। विजय ने सुना था कि भालू मरे हुए पर हमला नहीं करता है, यह सोचकर वह शीघ्र ही जमीन पर आँखें बंद करके लेट गया। जब भालू पास आया तो उसने अपनी साँसें भी रोक लीं। भालू ने उसे सूँघा और उसे मरा जानकर जंगल में चला गया।

भालू के जाने के बाद अजय पेड़ से उतरा और विजय से पूछा—भालू तुम्हारे कान में क्या कह रहा था। विजय ने कहा—भालू कह रहा था कि दोस्ती की परख संकट में ही होती है तथा कपटी और धोखेबाज मित्रों से दूर रहना चाहिए। अजय लज्जित हो अपने घर चला गया।

सीख—हमें अपने मित्रों का चुनाव सोच–समझकर करना चाहिए।

9. मोबाइल का सबक

रोहन के पापा आज घर में एक नया मोबाइल फोन लाए थे। रोहन बहुत खुश था। रोहन ने अपने लिए गेम डाउनलोड किए। वह मोबाइल पर गेम खेलता था। सेल्फी लेता था। एक बार उसकी माँ गीले फर्श पर फिसल कर गिर पड़ीं। उसने रोहन को आवाज लगाई। रोहन ने कहा आया माँ, लेकिन पहले एक सेल्फी ले लूँ। यह सुनकर उसकी माँ को बहुत बुरा लगा, लेकिन माँ ने रोहन को सबक सिखाने का निश्चय किया।

एक दिन जब माँ-बेटे पार्क में घूम रहे थे, रोहन मोबाइल पर गेम खेलते हुए माँ के साथ चल रहा था। अचानक रोहन को ठोकर लगी और गिर गया। माँ ने झट से मोबाइल को तो उठा लिया लेकिन रोहन को पड़े रहने दिया। रोहन दर्द से तड़प उठा। उसने माँ को आवाज लगाई। माँ ने कहा कि रुको अभी आई, पहले इन फूलों के साथ सेल्फी ले लूँ। रोहन को अपनी गलती का अहसास हो गया था। उसने माँ से माफी माँगी और भविष्य में मोबाइल अधिक न देखने की बात कही। रोहन को मोबाइल की लत से अच्छा सबक मिल चुका था।

सीख—अति हर चीज की बुरी होती है।

अध्याय–24 निबंध-लेखन

1. सर्व शिक्षा अभियान

प्रस्तावना—'सब पढ़ें सब बढ़ें' नारे को सार्थक करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान का प्रारंभ भारत सरकार द्वारा किया गया है। यह एक प्राथमिक बुनियादी शिक्षा प्रदान करने का अभियान है।

प्रारंभ—सर्व शिक्षा अभियान भारत सरकार द्वारा सन् 2001 में शुरू किया गया था, जिसमें सभी 6-14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जाती है।

उद्देश्य—सर्व शिक्षा अभियान का उद्देश्य 2010 तक प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाना था। इस अभियान के मुख्य उद्देश्य थे— गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षा तक सभी बालकों की पहुँच।

लाभ—इस अभियान से अनेक लाभ हुए हैं, जिनसे बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा मिली है तथा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

अन्य सहायक कार्यक्रम—सर्व शिक्षा अभियान की मुख्य उपलब्धियाँ हैं—बच्चों का स्कूल में नामांकन बढ़ाकर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, स्कूल छोड़ने की दर कम होना। इसके अतिरिक्त वंचित समूह तक शिक्षा की पहुँच तथा लैंगिक असमानता कम होना इसकी उपलब्धियाँ हैं।

उपसंहार—सर्व शिक्षा अभियान से भारत में शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है, जिससे अधिक बच्चों को स्कूल जाने और बेहतर शिक्षा प्राप्त करने में मदद मिली है।

2. खेलो-कूदो, आगे बढ़ो

प्रस्तावना—खेलों का मनुष्य जीवन में बहुत अधिक महत्व है, क्योंकि खेलने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है तथा मानसिक विकास होता है।

खेलों की आवश्यकता—खेलों से हमारे अंदर आत्मविश्वास, सहयोग, अनुशासन, साहस, एकता आदि मानवीय गुणों का भी विकास होता है। हमें नए-नए लोगों से मिलने और समझने का अवसर मिलता है। शारीरिक और मानसिक विकास के लिए खेलों की बहुत आवश्यकता है।

विभिन्न प्रकार के खेल—खेलों को मुख्यत: दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है— इनडोर गेम और आउटडोर गेम। घर के अंदर खेले जाने वाले खेल इनडोर गेम कहलाते हैं, जैसे— शतरंज, कैरम, लूडो, साँप-सीढ़ी, टेबिल टेनिस आदि। घर से बाहर खेले जाने वाले खेल आउटडोर गेम खेल कहे जाते हैं। जैसे—क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन, टेनिस, बास्केट बॉल, हॉकी, खो-खो, कबड्डी आदि।

खेलों का महत्व—खेलों का जीवन में बहुत महत्व है। यह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं, बल्कि मानसिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेलों से आत्मविश्वास, टीमवर्क और अनुशासन जैसे जीवनोपयोगी कौशल विकसित होते हैं।

उपसंहार—खेलो-कूदो और आगे बढ़ो। यह एक नारा नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है, जो स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने में मदद करती है। इसलिए खेलों को अपने जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनाएँ और जीवन में आगे बढ़ें।

3. रेलवे प्लेटफॉर्म का दृश्य

प्रस्तावना—यातायात के साधनों में रेलगाड़ी का महत्वपूर्ण स्थान है। यह सस्ती, सुलभ और अधिक सुरक्षित सवारी है। रेलवे स्टेशन, जहाँ रेलगाड़ी रुकती है, यहाँ बने चबूतरों को रेलवे प्लेटफार्म कहते हैं।

रेलवे प्लेटफॉर्म का दृश्य—एक बार मैं अपने परिवार के साथ जयपुर जाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुँचा, वहाँ प्लेटफॉर्म का दृश्य बहुत ही हलचल से भरा था। प्लेटफॉर्म पर गाड़ी में चढ़ने-उतरने वालों, अपने संबंधियों अथवा मित्रों की

विदाई तथा अगवानी करने वालों की भीड़ लगी हुई थी। प्लेटफॉर्म पर भीड़ का बहुत शोर–शराबा था। इसके अतिरिक्त सामान उठाने, गाड़ी में रखने, उतारने वाले कुली भाग–दौड़ कर रहे थे। एक–दो भिखारी भी प्लेटफॉर्म पर दिखाई दे रहे थे, खाने–पीने के सामान की तथा दैनिक उपयोग की चीजें तथा पत्र–पत्रिकाओं और पुस्तकों की अनेक स्टाल लगी हुई थीं। कुछ लोग प्लेटफॉर्म पर बनी बैंचों पर बैठे थे, कुछ चहलकदमी कर रहे थे।

गाड़ी का आगमन—कुछ ही देर में जयपुर जाने वाली गाड़ी आने की घोषणा हुई। लोगों में चहल–पहल बढ़ गई। निधारित समय पर रेलगाड़ी प्लेटफॉर्म पर आ गई। यात्री डिब्बे में चढ़ने के लिए रेलगाड़ी की ओर लपके, उधर उतरने वाले यात्री भी डिब्बे से उतरने लगे। चढ़ने और उतरने वाले धक्का–मुक्की करने लगे। हम भी निर्धारित डिब्बे पर पहुँचे और थोड़ी मशक्कत के बाद अपनी सीट पर जाकर बैठ गए।

उपसंहार—रेलवे प्लेटफॉर्म का दृश्य बड़ा ही रोचक और आकर्षक होता है। यहाँ यात्रियों की भीड़ बहुत अधिक रहती है। कभी भीड़ हल्की होती है तो कभी रेलगाड़ी आने पर फिर भीड़ बढ़ जाती है। फिर से यात्रियों के चढ़ने–उतरने का दृश्य आरंभ हो जाता है।

4. **बाढ़ का दृश्य**

प्रस्तावना—जब धरती को पानी की प्यास लगती है, तब तो पानी की बूँद भी नहीं बरसती और कभी पानी इतना बरसता है कि नदियाँ उसे अपने किनारों के आँचल में समेट नहीं पातीं और यही पानी बाढ़ के रूप में अभिशाप बन जाता है।

बड़ोदरा में बाढ़—भारी बारिश के कारण विश्वामित्री नदी उफान पर बहने लगी। लगातार बारिश से बड़ोदरा में बाढ़ के हालत बन गए। बाढ़–बारिश के चलते कई लोगों की मौत हो गई, हजारों लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया गया। शहर के दर्जन भर से ज्यादा इलाकों में 4 से 5 फुट पानी भर गया।

बाढ़ में घिरे जीव–जन्तु—बाढ़ के कारण जीव–जन्तु खासकर पालतू मवेशी—गाय, भैंस, अन्य कुत्ते आदि जानवर पूरी तरह फँस गए। इसके अलावा साँप, कछुए और साही जैसे जानवर भी बाढ़ में घिर गए थे। अनेक जीव–जन्तु इस बाढ़ में घिरकर मर गए।

कालोनियों में मगरमच्छ—विश्वामित्री नदी जो बड़ोदरा से होकर गुजरती है, मगरमच्छों का घर है और बाढ़ के कारण ये नदी से बाहर निकलकर शहर की कालोनियों में फैल गए, जिनमें से कुछ 14 फीट तक लंबे थे। जिससे स्थानीय लोगों में दहशत फैल गई। वन विभाग ने कई मगरमच्छों को नदी में पहुँचाया।

विभीषिका—बाढ़ के कारण बड़ोदरा में जान–माल की बहुत हानि हुई, बाढ़ की विभीषिका का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि लोग कई हफ्तों तक सामान्य स्थिति में नहीं आ पाए। बाढ़ के बाद फैली गंदगी, उससे उत्पन्न बीमारियों ने इस विभीषिका को और बढ़ा दिया।

उपसंहार—बाढ़ के कारण न केवल इंसानों को बल्कि जानवरों को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हमारे देश में प्रत्येक वर्ष कहीं–न–कहीं बाढ़ के कारण जान–माल की हानि होती रहती है। बाढ़ रोकने के लिए सुनियोजित प्रयास और प्रबंध किए जाएँ, ताकि बाढ़ की विभीषिका से बचा जा सके।

अध्याय–25 सड़क सुरक्षा एवं परिवेशीय सजगता

1. 'सड़क सुरक्षा' सुरक्षित यातायात से सम्बन्धित एक उपाय है जिसमें सड़क दुर्घटना में लोगों को चोट लगने और उससे मौत होने आदि घटनाओं को कम करने का प्रयास किया जाता है। इस हेतु यातायात के विभिन्न नियमों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है ताकि यातायात सर्वाधिक सुरिक्षत हो। परिवहन हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। ऐसी दशा में 'सड़क सुरक्षा' से सम्बन्धित नियमों का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है।
2. (क) पैदल चलते समय हमें सड़क के फुटपाथ पर चलना चाहिए।
   (ख) सड़क पार करते समय हमें ट्रैफिक लाइट में लाल बत्ती होने पर जेब्रा क्रॉसिंग से सड़क पार करनी चाहिए।
3. ट्रैफिक लाइट में पीली, लाल तथा हरी रंग की तीन बत्तियाँ होती हैं। पीली बत्ती लाल बत्ती के होने का संकेत देती है। लाल बत्ती होने पर वाहन रोकना पड़ता है। हरी बत्ती चालक को आगे बढ़ने का संकेत देती है।
4. सड़क पर बनी सफेद और काली धारी वाली पट्टियाँ को 'जेब्रा क्रॉसिंग' कहते हैं। इसके ऊपर से पैदल यात्री सड़क पार करते हैं।
5. 'सड़क की भाषा' से आशय यातायात के नियमों का ज्ञान होने से है। सड़क पर अनेक संकेतक चिह्न बने होते हैं। हमें उनके बारे में जानकारी होनी चाहिए, तभी हम सुरक्षित यात्रा कर सकते हैं।

6. सीट बेल्ट दुर्घटना की स्थिति में वाहन चालक एवं सवारी को आगे की टक्कर होने से रोकती है। यह वाहन चालक व सवार सभी व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण है।
7. (क) 101 पर। (ख) 108 पर। (ग) 100 पर। (घ) हमें पुलिस और एंबुलेंस को सूचना देनी चाहिए तथा घायलों की प्राथमिक चिकित्सा करनी चाहिए।
8. (क) ट्रैफिक लाइट पर खड़े रहकर इंजन न बंद करने से ईंधन की खपत बढ़ती है तथा वायु प्रदूषण भी होता है। (ख) आगे की गाड़ी व अपनी गाड़ी के बीच एक गाड़ी की दूरी रखनी चाहिए।
9. गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन पर बातें करने से चालक का ध्यान बातों की ओर चला जाता है। फलत: वाहन से नियंत्रण हटते ही प्राय: दुर्घटना हो जाती है। अत: वाहन चलाते समय मोबाइल पर बातें नहीं करनी चाहिए।
10. मुझे अपने दादाजी और विषय अध्यापक महोदय से यह जानकारी मिली कि सड़क चिह्न पूरी दुनिया में एक जैसे होते हैं। इनके द्वारा मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि विभिन्न देशों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। ये भाषाएँ प्राय: वाहन चालकों को समझ में नहीं आतीं। दूसरे शब्दों में सड़क के नियमों को समझने में भाषाई विभिन्नता रूकावट बन जाती है। इसी कारण सड़क के नियमों को संकेत रूप में समझाने के लिए पूरे विश्व में सड़क चिह्न एक जैसे होते हैं।
11. पैदल यात्रा परिपथ को जेब्रा क्रासिंग इसलिए कहते हैं क्योंकि सड़क पर जिस जगह यह क्रासिंग होती है वहाँ वैसी ही क्षैतिज धारीदार पट्टियाँ बनी होती हैं जैसी जेब्रा पशु के शरीर पर बनी होती हैं। इस प्रकार जेब्रा क्रासिंग का आशय धारीदार पट्टियों से होता है।
12. विद्यालय जाते सयम और घर वापस आते समय हम सड़क के जिन चिह्नों को देखते हैं उनमें से कुछ के अर्थ निम्न हैं— (i) आगे मोड़ है। (ii) प्रवेश निषेध। (iii) हॉर्न प्रतिबंधित। (iv) आगे विद्यालय है। (v) पैदल यात्रा प्रतिबंधित है। (vi) गति अवरोधक। (vii) गति सीमा। (viii) यू-टर्न निषेध (ix) ओवरटेक निषेध।
13. हमें यातायात के निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए—
    1. हमें सदैव सड़क पर बायीं ओर ही चलना चाहिए।
    2. पैदल चलने की दशा में सड़क हमेशा जेब्रा क्रासिंग से ही पार करनी चाहिए।
    3. सड़क संकेतों एवं चिह्नों को देखकर उनके द्वारा दिए गए सांकेतिक निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए।
    4. दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट अवश्य लगाना चाहिए।
    5. चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट अवश्य बाँधनी चाहिए। बाहनों को निश्चित किए गए स्थान पर ही पार्क (खड़ा) करना चाहिए।
14. सड़क पार करते समय हमें सर्वप्रथम दाएँ-बाएँ यह देखना चाहिए कि कहीं कोई वाहन तो नहीं आ रहा है। इसके बाद सड़क के विभिन्न संकेत चिह्नों को देखकर सावधानीपूर्वक सड़क पार करनी चाहिए। पैदल होने पर जेब्रा क्रासिंग से ही सड़क पार करनी चाहिए।
15. 1. जब हम पैदल हों तो ध्यानपूर्वक चलना चाहिए। सामने से आ रहे यातायात पर नजर रखनी चाहिए। जहाँ ड्राइवर नहीं देख पाए वहाँ सड़क पार करने से बचना चाहिए।
    2. डिवाइडर अथवा रेलिंग्स के ऊपर से कभी नहीं कूदना चाहिए।
    3. यदि हम साइकिल से यात्रा कर रहे हों तो साइकिल पर क्षमता से अधिक भार नहीं लादना चाहिए। यदि सड़क पर साइकिल मार्ग हो तो केवल उसका ही उपयोग करना चाहिए अथवा हमेशा बायीं ओर चलना चाहिए।
    4. सड़क पर मुड़ते समय यातायात पर दृष्टि डालनी चाहिए एवं हाथ से मुड़ने वाली दिशा में संकेत करना चाहिए।
    5. यदि हम बस से विद्यालय जा रहे हों तो शरीर का कोई भी अंग खिड़की से बाहर नहीं निकालना चाहिए। शोरगुल कदापि नहीं करना चाहिए। इससे चालक का ध्यान बँटता है और दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है।

16. त्रिभुजाकार चिह्न	वर्णन
	यह चिह्न वाहन को सावधानी से चलाने की चेतावनी देता है और यह दर्शाता है कि आगे थोड़ी दूरी पर स्कूल है। अत: गति धीमी रखें।
	यह चिह्न दर्शाता है कि आगे जेब्रा क्रासिंग है, पदयात्री सड़क पार करते हैं। अत: वाहन की गति नियंत्रित करें।

17. 1. प्रवेश निषेध, 2. हॉर्न प्रतिबंधित, 3. आगे विद्यालय है, 4. पैदल यात्रा प्रतिबंधित, 5. गति अवरोधक, 6. गति सीमा।
18. विद्यालय में जल का दुरुपयोग करने वाले छात्रों को हम समझायेंगे कि उन्हें जल का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि जल ही जीवन है। जल का सदुपयोग करना चाहिए। टंकी के नलों को खुला छोड़कर जल व्यर्थ में फैलाना नहीं चाहिए। क्योंकि कल पानी नहीं रहेगा तो हमारा जीवन संकट में पड़ जायेगा। हमारे दैनिक कार्य नहीं हो सकेंगे।
19. घर के पास गंदा पानी एकत्रित होने से मच्छरों का आतंक बढ़ जाएगा। क्योंकि मच्छर पानी में ही अण्डे देते हैं। ऐसी दशा में मलेरिया एवं डेंगू बुखार होने की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जायगी क्योंकि ये दोनों रोग मच्छरों के काटने से ही होते हैं। इसके निदान हेतु हम दो तरह का उपाय करेंगे—
    1. एकत्रित गंदे जल में मिट्टी का तेल डाल देंगे ताकि उसमें पनप रहे मच्छर नष्ट हो जाएँ।
    2. गंदे पानी की उचित निकासी के लिए अभिभावकों की मदद से सम्बन्धित व्यक्ति / विभाग से बात करेंगे।
20. हमें खाना खाने से पहले हाथ को साबुन से अच्छी तरह धोने के लिए इसलिए कहा जाता है क्योंकि जब हम काम कर रहे होते हैं तो हमारा हाथ अलग-अलग वस्तुओं, स्थानों आदि पर पहुँचता है। इन वस्तुओं, स्थानों पर विद्यमान विभिन्न प्रकार के हानिकारक जीव हमारे हाथों में चिपक जाते हैं। ये शरीर के अन्दर पहुँचकर घातक नुकसान पहुँचा सकते हैं। इसीलिए साबुन से हाथ को अच्छी तरह धोने के लिए कहा जाता है।
21. बाजार से विभिन्न वस्तुओं/सब्जियों/फलों आदि को पॉलिथीन बैग में लाना उचित नहीं है। इसके लिए हमें घर से कपड़े का थैला ले जाना चाहिए। पॉलिथीन का अपघटन नहीं हो पाता इस कारण मृदा के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसका प्रभाव अन्नोत्पादन पर पड़ता है। इसके अलावा जानवर आदि भी इसे खा जाते हैं जिसके कारण उनकी मृत्यु तक हो जाती है।
22. बिजली बचाने के लिए हम अपने स्तर से निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं—
    (क) जब आवश्यक हो तभी बल्ब, पंखे आदि जलाएँ/चलाएँ उन्हें अनावश्यक जलता हुआ/चलता हुआ न छोड़ें।
    (ख) यदि सीमित रोशनी की आवश्यकता हो तो अधिक बोल्ट/ वाट के बल्ब का प्रयोग न करें।
    (ग) बिजली का अपव्यय न हो इस हेतु ISI मार्क उपकरणों का इस्तेमाल करने के लिए अभिभावक से कहेंगे।
23. हमें भलीभाँति मालूम है कि स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ पर्यावरण अनिवार्य है। इसे स्वच्छ रखना हमारी महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इसकी स्वच्छता हेतु हम निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं—
    (1) एक पेड़ लगाकर उसे तैयार करने का संकल्प लें।
    (2) न तो जल को दूषित करें, न करने दें।
    (3) विवाह व अन्य समारोहों में ध्वनि विस्तारक यन्त्रों से ध्वनि प्रदूषण होता है। इस हेतु लोगों को जागरूक करेंगे।
    (4) कूड़ा-कचरे को निर्धारित स्थान पर ही इकट्ठा करने के लिए लोगों को प्रेरित करेंगे।
24. स्वच्छ भारत अभियान में हम अपने स्तर से यह योगदान दे सकते हैं कि विद्यालय/गाँव के साथियों के साथ अलग-अलग टोली बनाएँ और आस-पास के क्षेत्रों की साफ-सफाई करें। कूड़े-कचरे को निर्धारित स्थान पर एकत्रित कर उसका उचित निस्तारण करवाएँ। इस तरह किया गया छोटा-छोटा प्रयास अन्ततोगत्वा बहुत बड़ी सफलता अर्जित करेगा।
25. 'नमामि गंगे' योजना केन्द्र सरकार द्वारा गंगा नदी के प्रदूषण को समाप्त करने के लिए शुरू की गई है। इसके तहत नदी के ऊपरी सतह की सफाई से लेकर बहते हुए ठोस कचरे की समस्या को हल करने, घाटों के निर्माण, मरम्मत और आधुनिकीकरण का लक्ष्य शामिल है। यद्यपि गंगा नदी की सफाई इसके सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्व और विभिन्न उपयोगों के कारण बहुत कठिन है किन्तु बेहतर भविष्य के लिए ठोस कदम उठाने ही पड़ेंगे।
26. ई-प्रदूषण—इलेक्ट्रानिक उपकरणों (मोबाइल फोन, टी.वी., रेफ्रिजरेटर आदि) के कचरे से उत्पन्न होने वाला प्रदूषण, ई-प्रदूषण कहलाता है। इस कचरे के कारण पर्यावरण में विभिन्न प्रकार की जहरीली गैसें बनती हैं जो स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव डालती हैं। इससे बचने के लिए ई-कचरे का वैज्ञानिक प्रबन्धन आवश्यक है अन्यथा धीरे-धीरे यह विकराल रूप धारण कर लेगा।